॥ श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ॥

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः॥

वेदान्त पदार्थ परिचय
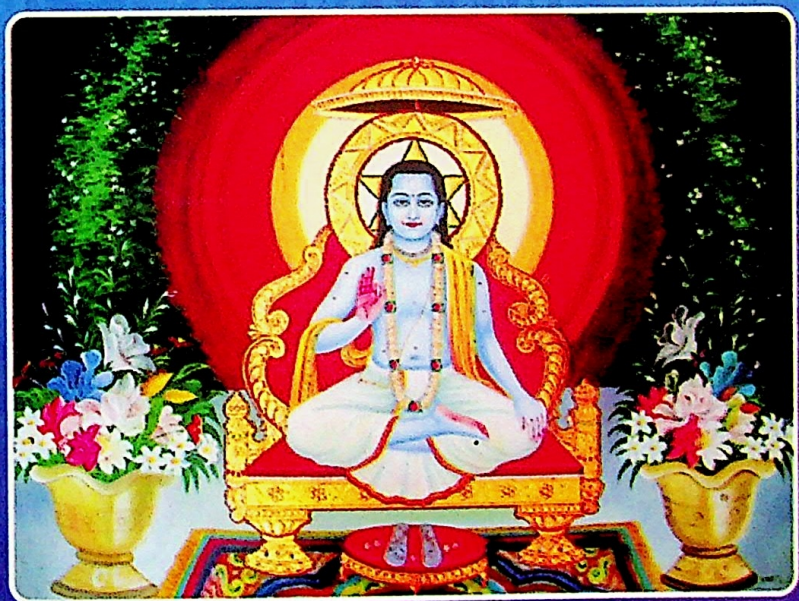
– पं. श्री वैष्णवदास शास्त्री

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *
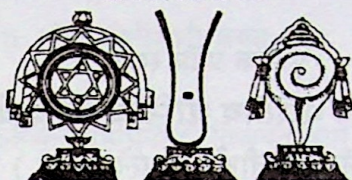
॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

विद्वन्मूर्द्धन्य पं० श्रीवैष्णवदास (जी) शास्त्रि प्रणीत-

वेदान्त पदार्थ परिचय

सम्पादक--

निम्बार्कभूषण पं० वासुदेवशरण उपाध्याय

व्या० सा० वेदान्ताचार्य

प्रकाशक--

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यचार्यपीठस्थ शिक्षा समिति

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) जि० अजमेर (राजस्थान)

अक्षय तृतीया

वि० सं० २०६६ श्रीनिम्बार्काब्द ५१०५

पुस्तक प्राप्ति स्थान--
अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

प्रथमावृत्ति--२०००

मुद्रक--
श्रीनिम्बार्क - मुद्रणालय
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

न्यौछावर
दश रुपये

॥ श्रीराधासर्वेश्वरौ जयतः ॥

॥ श्रीनिम्बार्कमहामुनीन्द्रो विजयतेतराम् ॥

समर्पणम्

सुजनकाव्यविदैः परिवीक्षिते

भवनिशाकृतकाण्डविनाशके ।

भगवति प्रभुनिम्बविभावसौ

लसतु चैष निबन्धकदम्बकः ॥

समर्पकः-

श्रीभगवन्निम्बार्काचार्यपदपङ्कज-

पराभक्तिकामः

पं० वैष्णवदासशास्त्री

वैशाख-सं० १९८५

दि० १५/४/१९२८

॥ श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ॥

* भूमिका *

सहृदय ! पाठकवृन्द !

आपको सुविदित है कि प्राणिपूर की प्रवृत्ति दुःख निवृत्ति की सतत चिन्ता किया करती है। किन्तु सर्वथा दुःख निवृत्ति ब्रह्म ज्ञान विना कभी नहीं हो सकती, अतएव ब्रह्म विचार की अत्यन्त आवश्यकता है और वह ब्रह्म विचार वेदान्त शास्त्राधीन है। उन शास्त्रों में भी साधारण व्यक्तियों का प्रवेश नहीं होता है। यद्यपि अद्वैत एवं विशिष्टाद्वैत के तो ऐसे पथ-प्रदर्शक बहुत से ग्रन्थ हैं किन्तु स्वाभाविक द्वैताद्वैत दर्शन में प्रवेश करने के लिए अद्यावधि कोई सरल ग्रन्थ नहीं था। उसकी पूर्ति पं. श्रीवैष्णवदासजी ने बड़ी ही सावधानी से की है। यह ग्रन्थ छोटा होते हुए भी अर्थ गौरव द्वारा निखिल वेदान्त का परिचय देता है। इसके परिशीलन से स्वाभाविक द्वैताद्वैत वेदान्त के सम्पूर्ण पदार्थों का परिचय अति दुरूह भी सुसाध्य हो जायेगा और यदि इसे खूब अभ्यास कर लें तो खण्डन मण्डन प्रणाली में साधारण शक्ति उत्पन्न हो सकती है। अतएव इस ग्रन्थ का अनुगुण नाम पदार्थ परिचय रखा गया है मेरी समझ तो स्वाभाविक भिन्नाभिन्न सम्प्रदाय में पदार्थ परिचय पथ प्रदर्शक की आवश्यकता थी, और उसकी पूर्ति यथोचित समय पर की गई है आशां है कि शास्त्रानुरागी सज्जन इसे अपना कर उक्त पण्डितजी का परिश्रम सफल करेंगे।

निवेदकः-

विदुषामनुचर पं० भीमदासः

प्राक्कथन

वेदान्त दर्शन गहन चिन्तन का विषय है। प्रस्थानत्रयी अर्थात् श्रुति प्रस्थान-उपनिषद् समूह, स्मृतिप्रस्थान-श्रीमद्भगवद्-गीता, न्यायप्रस्थान-ब्रह्मसूत्र (शारीरकमीमांसा सूत्र) इन तीनों के समाहार को प्रस्थानत्रयी संज्ञा दी गयी है। इन्हीं के स्वाध्याय-मनन-अनुशीलन से भगवत्प्राप्ति हेतु तत्त्वज्ञान (पदार्थज्ञान) हो जाता है। वेदान्तदर्शन "भोक्ता भोग्यं प्रेरितारं च मत्वा सर्वं प्रोक्तं त्रिविधं ब्रह्म ह्येतत्" इस उपनिषद् वाक्य के अनुसार भोक्तृ भोग्य-नियन्तृरूप त्रिविध पदार्थों का स्वरूप लक्षण भेद और उनके पारस्परिक सम्बन्ध का सम्यक्तया विचार कर विभिन्न सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्यों तथा अनेक मेधावी मनीषी विद्वानों ने उक्त प्रस्थानत्रयी पर बृहद् भाष्यों एवं व्याख्यान ग्रन्थों का प्रणयन किया है।

श्रीमद् हंस-सनकादि-नारद प्रवर्तित, श्रुतिस्मृतिसूत्रादि ग्रन्थों में स्वयं व्यक्त स्वाभाविक भेदाभेद (द्वैताद्वैत) सिद्धान्त एवं श्रीराधाकृष्ण की रसमयी निकुञ्जोपासना का सुदर्शनचक्रावतार जगद्गुरु श्रीभगवन्निम्बार्काचार्यजी ने वृत्यात्मक स्वकीय रचनाओं में संक्षिप्त होते हुए भी अत्यन्त सागर्भितरूप में उल्लेख किया है। उसी का परवर्ति पूर्वाचार्यचरणों ने बृहद् भाष्यों, विवरणों, व्याख्याओं द्वारा समुपबृंहण किया है। सर्वसाधारण जिज्ञासु वैष्णवजनों को सुगमता से वेदान्ततत्त्व का परिज्ञान कराने हेतु हमने न्याय-वैशेषिक-वेदान्त प्रभृति शास्त्रों का अनुशीलन कर "वेदान्त पदार्थ परिचय"

नामक इस लघु निबन्धात्मक ग्रन्थ की रचना की है। इससे पूर्व संस्कृत में "सिद्धान्तमन्दाकिनी" और हिन्दी में "निम्बार्कमत-प्रकाशिका" नामक गीता-व्याख्या की रचना विस्तृत रूप से की है। उन्हीं का संक्षिप्त स्वरूप यह निबन्ध है। इसमें प्रमाण-प्रमेय पदार्थ की विवेचना अन्य प्रमाणों का प्रत्यक्ष-अनुमान-शब्द इन तीन प्रमाणों में ही अन्तर्भूत कर प्रमाणों की संख्या तीन ही निर्धारित की गयी है। इसी प्रकार प्रमेय पदार्थों का द्रव्य-अद्रव्य, जड-अजड-पराक्-प्रत्यक् के भेदों और अवान्तर भेदों का विश्लेषण किया गया है। उदाहरण के साथ जीव के आठ भेदों का वर्णन किया गया है। इसी प्रकार प्रत्यक्ष प्रमाण को उदाहरण देकर समझाया गया है। अनुमान प्रमाण के पक्ष, साध्य, हेतु दृष्टान्त, व्याप्ति, परामर्श, न्याय वाक्य एवं हेत्वाभास आदि का सरल तथा विशद रूप में विवरण प्रस्तुत किया है। शब्द प्रमाण में वृत्तियों का निरूपण एवं प्रमाणों में परस्पर विरोध का परिहार भी कर दिया है।

प्राकृत अचेतन में सृष्टि विस्तार का क्रमबद्ध वर्णन हुआ है जिसमें भूगोल-खगोल, चतुर्दश भुवन, देवगन्धर्व, नाग किन्नर, मनुष्य, पशु पक्षी, सरीसृप, वनस्पति प्रभृति पदार्थों का विवेचन किया गया है। इसी क्रम में पृथिव्यादि पञ्चमहाभूतों की पञ्चीकरण प्रक्रिया जो मञ्जूषा प्रभृति आकर ग्रन्थों में विस्तार से वर्णित हुई है, उसी को सरल एवं संक्षिप्त रूप से प्रस्तुत निबन्ध ग्रन्थ में निबद्ध किया है। प्राकृत मण्डल से बाहर "आदित्यवर्णं तमसः परस्तात्" इस श्रुति वचन के अनुसार तमः शब्द वाच्य प्राकृत मण्डल से परे आदित्यवत् प्रकाशमय अनावरक अप्राकृत अचेतन पदार्थ के रूप

में वैकुण्ठ, गोलोक साकेत, शिवलोक, आमोद-प्रमोद, परम व्योम आदि चतुर्दश दिव्य भगवल्लोकों का परिवर्णन है। इसी प्रकार प्रकृति नियन्ता, क्षण, लव, दिनरात, मास-ऋतु-अयन-वर्ष, युग-युगान्तर, कल्प-कल्पान्तर के भेद से सखण्ड, नित्यविभूति रूप में अखण्ड श्रीहरि का नियम्य काल पदार्थ भी अचेतन के ही अन्तर्गत वर्णित है।

परमात्मतत्त्व वर्णन में चतुर्व्यूह, साङ्ग, सशक्तिक, नित्य पार्षदादि संवलित श्रीकृष्ण के लोकोत्तर माहात्म्य का प्रख्यापन किया गया है। भगवान् के ज्ञान, बल, ऐश्वर्य, सौशील्य, वात्सल्य, सौकुमार्य, सौन्दर्य, लावण्य आदि अनन्त दिव्य कल्याणमय स्वरूप-विग्रहगुणों का दिग्दर्शन किया गया है। इन गुणों के कार्य और शरणापन्न व्यक्ति के उपयोग सम्बन्धी विचार भी दर्शाया है। साधन पदार्थों में कर्म, ज्ञान, भक्ति, प्रपत्ति का साङ्गोपाङ्ग वर्णन है इसी क्रम में जीव स्वरूप एवं उनकी स्थिति प्रवृत्ति, कर्मगति, भगवद्भावापत्ति रूप मोक्ष का संक्षिप्त रूप में दिग्दर्शन किया गया है।

इस प्रकार इस लघु आकार वाले निबन्ध ग्रन्थ में वैष्णव-जनों को उनकी विविध जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त हो सकेगा हमें ऐसा दृढ विश्वास है।

श्रीकृष्णार्पमस्तु-

मिति-वैशाख कृष्ण १० रविवार

वि० सं० १९८५

दिनांक १५/४/१९२८

विद्वद्विधेय-

वैष्णवदास शास्त्री

सम्पादकीय--

प्राचीन दुर्लभ ग्रन्थों के पुनः प्रकाशन क्रम में अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ शिक्षा समिति द्वारा न्याय-व्याकरण-वेदान्तादि शास्त्रों के मर्मज्ञ विद्वान्, अनेक ग्रन्थों के प्रणेता, वीतराग-तपोमूर्ति गोलोकवासी पं० श्रीवैष्णवदासजी शास्त्री की प्रसिद्ध रचना "वेदान्त पदार्थ परिचय" का द्वितीय प्रकाशन किया जा रहा है। शास्त्रीजी ने स्वरचित "सिद्धान्तमन्दाकिनी", निम्बार्कमतप्रकाशिका (गीता व्याख्या) एवं पूर्वाचार्य प्रणीत अन्य भाष्य ग्रन्थों के आधार पर सर्वजन हिताय हिन्दी भाषा में उक्त निबन्ध ग्रन्थ का प्रणयन किया था। उसकी मुद्रित प्रतियाँ अप्राप्य हो रही थी। यह पुस्तक निम्बार्कीय वैष्णवजनों के लिए परम उपयोगी है। "यथानाम तथा गुण" के अनुसार इस ग्रन्थ में श्रुति-स्मृति-सूत्र प्रतिपादित भोक्तृ-भोग्य नियन्तृ रूप चिदचिदीश्वर त्रिविध पदार्थों का प्रमाण-प्रमेय विवेचन द्वारा वेदान्त के दुरूह प्रसङ्गों को भी सरलतम रीति से समझाया गया है। पूर्वाचार्यों द्वारा देववाणी में प्रणीत भाष्यों, व्याख्याग्रन्थों, प्रबन्धों का परिज्ञान करना सबके लिए सहज सुगम नहीं है, परन्तु स्वसाम्प्रदायिक सिद्धान्तों, पदार्थों, उपासना पद्धति एवं सदाचार सम्बन्धी विषयों का प्रत्येक वैष्णवजनों, श्राद्धालु जिज्ञासुओं को बोध होना आवश्यक है। अतः वर्तमान जगद्गुरु श्रीनिम्बार्का-चार्यपीठाधीश्वर श्री श्रीजी महाराज की आज्ञा से प्रस्तुत ग्रन्थ का द्वितीय प्रकाशन के रूप में सम्पादन किया गया है।

पण्डितप्रवर श्रीवैष्णवदासजी शास्त्री का जीवन परोपकार-मय रहा। उन्होंने स्वयं अनिकेत रहते हुए सतत शास्त्रानुशीलन एवं श्रीभगवच्चिन्तन में जीवन यापन किया। वृन्दावन, मथुरा, निम्बग्राम,

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ निम्बार्कतीर्थ, पुष्कर आदि पावन तीर्थधामों में रहकर तपःसाधना तथा शास्त्र रचना की। आपके कृपापात्र शिष्यों में विद्वन्मूर्धन्य पं० श्रीभगीरथजी झा जैसे अद्वितीय मनीषी थे। आप जितने शास्त्र लेखन सदाचार में तत्पर थे उतने ही शास्त्रार्थ और योग साधन में परम कुशल थे। आयुर्वेद के भी आप मर्मज्ञ विद्वान् थे। ''आहार शुद्धौ सत्व शुद्धिः, सत्वशुद्धौ ध्रुवा-स्मृतिः'' इस श्रुति वचन का अक्षरशः पालन करते, तदनुसार उसके प्रभाव से भी समन्वित थे। आपकी रचनाओं में मौलिक रूप से संस्कृत में न्यायसिद्धान्तमुक्तावली, अध्यात्मसुधातरङ्गिणी की तरह कारिका एवं उसकी व्याख्या रूप ''सिद्धान्तमन्दाकिनी'' नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ है जो ''जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर'' की शास्त्री प्रथम वर्ष परीक्षा के निम्बार्क दर्शन पाठ्यक्रम में निर्धारित है।

इसी प्रकार श्रीमद्भगवद्गीता के अन्वयार्थ सहित ''निम्बार्कमतबोधिका'' नाम से हिन्दी में विस्तृत विवेचनात्मक व्याख्या की है जिसमें अध्यास का प्रचुरमात्रा में खण्डन किया है। उस व्याख्यात्मक ग्रन्थ का प्रकाशन यहाँ आचार्यपीठ द्वारा पहले हो चुका है। प्रस्तुत ''वेदान्त पदार्थ परिचय'' ग्रन्थ का पठन-मनन कर वैष्णवजन अवश्य ही लाभान्वित होंगे इसी विश्वास के साथ लेखनी को विराम देता हूँ।

विदुषांवशंवदः-

निम्बार्कभूषण-**वासुदेवशरण उपाध्याय**

व्या० सा० वेदान्ताचार्य

प्राचार्य-

श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय

निम्बार्कतीर्थ

मिति-वैशाख शुक्ल ३ सोमवार

वि० सं० २०६६

दिनांक २७/३/२००९

वेदान्त पदार्थ परिचय

मंगलाचरणम्

ज्ञानानन्दमयं देवं नत्वा सद्यो हयाननम् ।
वेदान्तस्य पदार्थानां परिचयः क्रियतेऽधुना ॥

अथ पदार्थ निरूपणम्

पदार्थ तीन हैं, चित्, अचित् और ब्रह्म ॥ ज्ञान स्वरूप श्रीकृष्णाधीन ज्ञानधर्म्मी बन्धमोक्ष योग्य अणुपरिमाणवाला जीव चित् हैं सो चित् आठ प्रकार का है, बद्धमुक्त दो हैं, बद्ध में दो भेद हैं मुमुक्षु वभुक्षु। वुभुक्षु दो हैं भावी कल्याणेच्छुक १। केवल विषयानन्दी २॥ मुमक्षु दो हैं स्वस्वरूपप्राप्ति के इच्छुक, श्रीकृष्ण-स्वरूपप्राप्ति के इच्छुक॥ मुक्त दो प्रकार के हैं नित्यमुक्त और मुक्त। नित्यमुक्त दो प्रकार के हैं अन्तरंग और बाह्य। मुक्त दो प्रकार के हैं स्वस्वरूपप्राप्त१ परस्वरूप प्राप्त २ । केवल शरीर पुष्ट्यर्थ कर्तव्यकर्ता विषयानन्दी वुभुक्षु हैं और विषय भोगते हुए शुभकर्तव्येच्छुक भावीश्रेयस्कामा मुमुक्षु हैं। श्रीकृष्ण विग्रह से कभी पृथक् न होने वाले अन्तरंग नित्य मुक्त हैं जैसे शंख चक्र श्रीवत्सादि, नित्य मुक्त वह हैं जिन्होंने संसार में कभी दुख नहीं भोगा है। श्रीकृष्ण विग्रह से कभी युक्त कभी अलग भी होते हैं वे बाह्य नित्य मुक्त हैं जैसे गरुड़ विश्वक्सेनादि। ऐसे जीवों के आठ भेद हुये। श्रीनिम्बार्क भगवान् सुदर्शनावतार हैं इसलिये अन्तरंग नित्यमुक्त हैं। वे सब जीव स्वरूप

धर्म से नित्य हैं। अचित् चित् और ब्रह्म से भिन्न हैं सो त्रिधा हैं प्राकृत, अप्राकृत काल भेद से। जीवों का भोग विषय प्राकृत है सो इसका वुद्ध्यहंकार मन शब्द स्पर्शादि पांच विषय, पंच ज्ञानेन्द्रिय पंचकर्मेन्द्रिय पृथिवी, जल, तेज, वायु, आकाश भेद से २४ प्रकार के हैं। अप्राकृत अचेतन पर ब्रह्म कृष्ण की त्रिपाद विभूति मुक्त प्राप्ति स्थान है, सो एक है लीलारूप से। काल समय है। ब्रह्म एक श्रीकृष्ण है। श्रीराम नृसिंह नारायणादि नाम श्रीकृष्ण के पर्याय हैं। कार्यार्थ वामनादि रूपेण श्रीकृष्ण अनेक हैं। वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध ये ४ व्यूह हैं। ब्रह्मांगी हैं ये ४ अंग हैं। ब्रह्म देश काल सम्बन्ध रहित हैं।

सब पदार्थ प्रमाण प्रमेय भेद से द्विधा हैं। प्रमाण ३ हैं। प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द भेद से। प्रमेय द्विधा हैं द्रव्य अद्रव्य भेद से। द्रव्यद्विधा हैं जड़ अजड़ भेद से। जड़ द्विधा हैं प्रकृति, काल भेद से। प्रकृति बुद्धि अहंकार पंचतन्मात्रा पंच ज्ञानेन्द्रिय पंचकर्मेन्द्रिय मन पंचभूत भेद से २४ हैं। कालोपाधि से भूत, भविष्य, वर्तमान भेद से त्रिधा है अजड़ द्विधा है पराक् प्रत्यक् भेद से। अजड़ पराक् द्विधा हैं नित्यत्रिपाद विभूति, धर्म रूप ज्ञान भेद से। प्रत्यक् द्विधा हैं ईश्वर जीव भेद से। जीव अष्टधा है सो कहा गया । ईश्वर एक है कार्यार्थ अनेक हैं अद्रव्य प्रमेय, सत्त्व, रज, तम, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, संयोग, शक्ति १० है प्रमाकरण प्रमाण है, प्रमा लक्ष्य है प्रमाकरणत्व लक्षण है। संशय विपर्य से अन्य व्यवहार योग्य ज्ञान प्रमा है। एक धर्मी में भावाभाव प्रकारक संशय है विपरीत विपर्यय है। ज्ञान एक प्रकारक एक विशेष्यक होता है।

लक्षण के अव्याप्ति, अतिव्यप्ति, असम्भव, तीन दोष हैं। लक्ष्य के देश में लक्षणागमन अव्याप्ति है। लक्ष्य से अन्य में लक्षण गमन अतिव्याप्ति है। लक्ष्यमात्र में लक्षण न पहुँचना असम्भव है। अव्याप्ति, अतिव्याप्ति, असम्भव त्रिदोष सहित लक्षण दुष्ट कहाता है। अप्राप्तार्थ प्रकाशक प्रमाण है। अज्ञातार्थ बोधक हेतु है वह द्विधा है, निमित्तोपादान भेद से। निमित्त द्विधा है कर्ताकरण भेद से। जो कार्य करता है वह कर्ता है जिसकी क्रिया के अव्यवहितो-त्तरक्षण में कार्य होय वह करण है क्रिया का नाम व्यापार है प्रधान क्रिया में रहती है कर्ता के क्रिया से जो क्रिया उत्पन्न होती है सो करण कर्म में रहती है। प्रमा त्रिधा है प्रत्यक्ष १ अनुमति २ शब्द ३ भेद से। प्रत्यक्ष के करण प्रत्यक्ष है, अनुमति के करण अनुमान है, शब्द के करण शब्द है। इन्द्रियार्थ संयोगोत्पन्न ज्ञान प्रत्यक्ष है। प्रत्यक्ष में इन्द्रिय करण हैं, इन्द्रियार्थ संयोग निमित्त कारण है। यह जीव का प्रत्यक्ष है ईश्वर का प्रत्यक्ष इन्द्रियाधीन नहीं है। सो प्रत्यक्ष द्विधा है बाह्याभ्यन्तर भेद से। इन्द्रियार्थ संयोग से जो प्रत्यक्ष होता है वह बाह्य है और मन से जो प्रत्यक्ष है सो आभ्यान्तरिक है। निर्विकल्पक ज्ञान में प्रमाण नहीं है, जो वेदान्त दूर से दिखाता है जब तक देवदत्त के स्वरूप की पहिचान नहीं होती है तब तक निर्विकल्पक । अन्य मत वादी मानते हैं सो ज्ञान सविकल्पक ही है देवदत्त की पहिचान होने पर भी देवदत्त में करचरणादि प्रकार हाथी के भेद मालूम होते ही है लड़का को भी मालूम होता है कि हाथी नहीं है, मनुष्य है। इसी तरह ब्रह्मज्ञान सविकल्पक है। प्रत्यक्ष ज्ञान-घ्राणज, रासन,स्पार्शन, चाक्षुष, श्रावण, मानस, भेद से ६

प्रकार है। घ्राणेन्द्रिय से घ्राणज प्रत्यक्ष होता है, रसना से रासन, स्पर्श (त्वचा)से स्पार्शन, चक्षु से चाक्षुष, श्रोत्र से श्रावण ज्ञान होता है। गन्ध ग्रहण कर्त्ता इन्द्रिय घ्राण है रस ग्रहण कर्त्ता इन्द्रिय रसना है, स्पर्श ग्रहण कर्त्ता त्वक्, रूप ग्रहण कर्त्ता चक्षु, शब्द ग्रहण कर्त्ता श्रोत्र है, आभ्यन्तरिक वस्तु ग्रहण कर्त्ता मन है। ये सब ज्ञान चेतन में होते हैं। द्रव्य ग्रहण कर्त्ता त्वक् चक्षुरादि इन्द्रियां हैं। द्रव्य में रूप-रसादि इन्द्रिय संयुक्ताश्रयत्व सम्बन्ध से ग्रहण होते हैं। निर्विकल्पक ज्ञान भिन्न प्रत्यक्ष द्विधा है अर्वाचीन और अनर्वाचीन। अर्वाचीन द्विधा है इन्द्रिय सापेक्षित और निरपेक्षित। इन्द्रिय निरपेक्षित द्विधा है स्वयं सिद्ध और दिव्य । स्वयं सिद्ध योगज प्रत्यक्ष है, दिव्य श्रीकृष्ण कृपा से होता है। अनर्वाचीन इन्द्रिय निरपेक्षित मुक्त जीव और स्वर ज्ञान है अर्वाचीन पीछे कहा गया। यही ज्ञान अनुभव कहाता है। अनुभव से संस्कार संस्कार से स्मृति होती है सो स्मृति ज्ञान प्रत्यक्ष है। सादृश्य ज्ञान स्मृति ज्ञान का सहकारी है यज्ञ दत्त तुल्य देवदत्त को देखने से यज्ञ दत्त का स्मरण होता है, जो देवदत्त प्रयाग में देखा गया वही देवदत्त है यह प्रत्यभिज्ञा भी प्रत्यक्षान्तर्गत है। अभाव भावरूप अधिकरण स्वरूप होने से अभाव ज्ञान प्रत्यक्ष है। अभाव चतुर्धा है प्रागभाव, प्रध्वंसाभाव, अत्यन्ताभाव, अन्योन्याभाव। प्रागभाव प्रध्वंसाभाव उपादान कारण में रहते हैं, अत्यन्ताभाव प्रतियोगी का अधिकरण छोड़ अन्य जगह रहता है। अन्योन्याभाव प्रतियोगी को छोड़कर और जगह रहता है। घट का प्रागभाव प्रध्वंसाभाव कपाल में कपाल स्वरूप है। भूतल में घटात्यन्ताभाव भूतल स्वरूप है,

घटान्योन्याभाव पट में पट स्वरूप है अभाव ज्ञान प्रत्यक्ष है। सब ज्ञान यथार्थ हैं निम्बार्क मतप्रकाशिका भगवद्गीता टीका के त्रयो दशाध्याय में जड़त्वादि हेतु खण्डन स्थल में कौन ज्ञान किस प्रकार यथार्थ है सो लिखा है। अन्य मतवादी शुक्ति रजत इत्यादि भ्रम मानते हैं सो यथार्थ है भ्रम नहीं है। ज्ञानप्रागभाव ही अज्ञान है। संख्या परिमाण, पृथक्त्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, गुरुत्व, द्रवत्व ये गुण नहीं है। रूपरसादि गन्ध स्पर्श शब्द विषय हैं। उपमान अनुमानान्तर्गत हैं, अर्थापत्ति भी अनुमानान्तर्गत है। अनुपलब्धि प्रत्यक्षान्तर्गत है। ऐतिह्य शब्दान्तर्गत है। चेष्टा प्रमाणानुमानान्तर्गत है। शुक्ति में रजत ज्ञान, रज्जु में सर्प ज्ञान इत्यादि प्रत्यक्ष ज्ञान हैं। रजत मैं जानता हूँ यह अनुव्यवसाय ज्ञान है यहाँ आत्मा में ज्ञान है इस ज्ञान का विषय ज्ञान है विषय रूप ज्ञान का विषय रजत है ज्ञान विषयक अनुव्यवसाय कहाता है। यह प्रत्यक्ष प्रमाण दृष्ट वस्तु का प्रकाशक है। जो अप्रत्यक्ष वस्तु है उसको अनुमान ग्रहण कर सकता है अनुमान प्रत्यक्ष पूर्वक होता है इसलिये अनुमान कारण प्रत्यक्ष है। अनुमान जिसको नहीं ग्रहण कर सकता है उसको शब्द ग्रहण करता है इसलिये शब्द में अधिक प्रमाणत्व है। लोक में अतीन्द्रिय वस्तु सिद्ध्यर्थ अनुमान है। ब्रह्म केवल शब्द प्रमाण है।

इति प्रत्यक्ष निरूपणम्

अथ अनुमानम्

अनुमिति करणानुमान है, व्याप्ति ज्ञानोत्पन्न ज्ञान अनुमिति है। लिङ्ग परामर्शानुमान है। महानसादि में धूम में व्याप्ति ग्रहण के पीछे पर्वत में जाकर धूम देखा इसके बाद धूम अग्नि का व्याप्य है। इसके बाद अग्नि का व्याप्य धूमवाला यह पर्वत है यह ज्ञान परामर्श है, यही परामर्शानुमान है। इस परामर्श से अनुमिति होती है। लीन वस्तु प्राप्त कर्त्ता लिङ्ग है, लिङ्ग हेतु कारण साधन कहाता है। साध्य वाले से अन्य में अप्रवृत्त होते हुए साध्य समानाधिकरण व्याप्ति है। पर्वत अग्निवाला है धूम होने से यहाँ पर्वत पक्ष है पर्वत में अग्नि साध्य है धूम हेतु है साध्य वाले पर्वत से अन्य जलादि में धूम अवृत्त होते हुए साध्याग्निसमानाधिकरण है, व्याप्ति विशिष्ट पक्षधर्मता ज्ञान परामर्श है। धूम में अग्नि की व्याप्ति है। धूम में ही रहने वाली पक्षधर्मता है समानाधिकरण से व्याप्ति गयी पक्ष धर्मता में, तब व्याप्ति में पक्षधर्मता विशेषण होने से पक्षधर्मता विशिष्ट व्याप्ति हुई। पक्ष धर्मता धूम में स्वरूप से है धूम पक्ष में संयोग से है तब अग्नि के व्याप्ति विशिष्ट धूम धूम विशिष्ट पर्वत हुआ, अग्नि व्याप्ति प्रकारक धूम विशेषक १ धूम प्रकारक पर्वत विशेषक २ ज्ञान हुआ। यह स्वार्थानुमान हुआ। जो कि स्वयं धूम से अग्नि का ज्ञान कर अन्य पुरुष के प्रतिबोधार्थ अवयवों (अवयव वाक्यों) का प्रयोग करता है वह परार्थानुमान है। अवयव समुदाय वाक्य न्याय है सो अवयव ५ हैं। प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय, निगमन। साध्य विशिष्ट पक्ष वोधजनक वाक्य प्रतिज्ञा है जैसे अग्नि वाला

पर्वत है। कैसे है यह शङ्का निवृत्त करने वाला पञ्चम्यन्त हेतु है जैसे धूम होने से। धूम होय अग्नि नहीं है यह दोष वारण करने के लिये वाक्य उदाहरण है जैसे जहाँ-जहाँ धूम है तहाँ-तहाँ अग्नि है जैसे महानस में। हेतु उदाहरण विशिष्ट परामर्श जनक वाक्य उपनय है जैसे अग्नि व्याप्य धूम वाला यह पर्वत है यह वाक्य उपनय है, अवाधित असत्प्रति-पक्षित साध्य व्याप्य हेतु वाला पक्ष है यह निगमन है। वे पञ्च अवयव नैयायिक मानते हैं सिद्धान्त में प्रतिज्ञा हेतु उदाहरण यही अवयव हैं उपनयन निगमन मानना व्यर्थ है। हेतु व्याप्य है साध्य व्यापक है। साध्य के अपेक्षा से थोड़े देश में रहता है वह व्याप्य है। हेतु की अपेक्षा से जो अधिक देश में रहता है। जैसे अग्नि की अपेक्षा से महानस चत्वर गोष्ठ में रहने वाला धूम अग्नि का व्याप्य है। धूम के अपेक्षा से अयोगोलक महानस चत्वर गोष्ठ पर्वतों में रहने वाली अग्नि धूम का व्यापक है। पहले हेतु शब्द उच्चारण कर साध्य शब्द का उच्चारण होता है जैसे जहाँ धूम है तहाँ अग्नि है। जहाँ अग्नि है तहाँ धूम है ऐसा उच्चारण नहीं होता है अयोगोलक में अग्नि है धूम नहीं है। जहाँ पर साध्य हेतु दो समान जगह में हैं तहाँ हेतु अधिकरण में अभाव का अप्रतियोगी साध्य हेतु का व्यापक है जैसे लक्ष्य वाला है, वाच्य होने से घट के समान। यहाँ वस्तु पक्ष है लक्ष्यत्व साध्य है वाच्यत्व हेतु है घट दृष्टान्त है। लक्ष्यत्व वाच्यत्व दो समान वस्तु मात्र में परमत में रहते हैं। वाच्यत्व लक्ष्यत्व दो का अभाव निर्विशेष ब्रह्म में है वाच्यत्व के अधिकरण वस्तु में निर्विशेषत्व का अभाव है उस अभाव का प्रतियोगी निर्विशेषत्व है अप्रतियोगी लक्ष्यत्व है लक्ष्यत्व वाच्यत्व

का व्यापक है। निर्विशेषत्व ब्रह्मवाच्य न होने से अवस्तु है। हेतु ३ प्रकार का होता है केवलान्वयी केवलव्यतिरेकी अन्वय व्यतिरेकी भेद से। वृत्तिवाला अत्यन्ताभाव के अप्रतियोगी हेतु केवलान्वयी है । जैसे (सत्तावद् वस्तु वस्तुत्वात्) वस्तु सत्तावाला है वस्तुत्व होने से। सत्ता दो प्रकार का है व्याप्य व्यापक भेद से, व्याप्य सत्ता दो प्रकार की है कूटस्थ विकारी भेद से। कूटस्थ जीव में है विकारी अचेतन में है। व्यापक सत्ता परमेश्वर में है, सत्ता चेतन अचेतन परमेश्वर सब में रहित अवस्तुत्व है वस्तुत्व का कहीं अभाव न होने से निर्विशेष ब्रह्म के वृत्तिवाला अभाव के प्रतियोगी निर्विशेष ब्रह्म है अप्रतियोगी वस्तुत्व हेतु केवलान्वयी है साध्य के साथ हेतु का कहीं न छूटे वह केवलान्वयी है अथवा विपक्ष शून्य हेतु केवलान्वयी है। साध्य के निश्चय वाला सपक्ष है साध्य के सन्देह वाला पक्ष है निश्चित साध्य के अभाव वाला विपक्ष है निश्चित साध्य के अभाव वाला विपक्ष है जैसे जीव व्याप्य सत्तावाला है अणुत्व होने से अणुत्वाभाव का ब्रह्म में निश्चय है। सब नित्य है प्रमाण विषयत्व होने से सपक्ष है नित्यत्व साध्य है प्रमाण विषयत्व हेतु है। वृत्तिवाला अभाव घटाभाव है उसका प्रतियोगी घट सिद्ध है अप्रतियोगी प्रमाण विषय है प्रमाण विषयत्व का कहीं अभाव नहीं है प्रमाण विषयत्व साध्य नित्यत्व सब में है विपक्ष कोई नहीं है विपक्ष शून्य प्रमाण विषयत्व हेतु है। अनवगत साध्य साधन का सम्बन्ध केवल व्यतिरेक हेतु है जैसे ब्रह्म व्यापक है अपरिछिन्नत्व होने से। यहाँ ब्रह्म पक्ष है व्यापकत्व साध्य है अपरिच्छिन्नत्व हेतु है। यहाँ ब्रह्म से अन्य सपक्ष व्यापकत्व अपरिच्छिन्न वाला कोई

नहीं है इसलिये अन्वय व्याप्ति नहीं है व्यतिरेकी है। व्यतरेकी में हेतु का अभाव साध्य होता है साध्य का अभाव हेतु होता है जहाँ-जहाँ व्यापकत्वाभाव है तहाँ तहाँ परिच्छिन्नत्वाभाव है यह व्यतिरेक व्याप्ति हुई। ब्रह्म से अन्य में अपरिच्छिन्नत्वाभाव व्यापक है व्यापक-त्वाभाव व्याप्य है। परिच्छिन्नत्वाभाव की व्याप्ति जो व्यापकत्वाभाव में रही सो, व्यापकत्वाभाव व्यापकाभाव प्रतियोगीत्व सम्बन्ध से अपरिच्छिन्नत्व में आई अतएव परिच्छिन्नत्व हेतु व्यतिरेकी हुआ। अथवा सपक्ष शून्य पक्ष वृत्ति हेतु केवल व्यतिरेकी है। साध्य का निश्चय जिसमें है वह सपक्ष है । साध्य का सन्देह जिसमें है वह पक्ष है जब तक साध्य का निश्चय नहीं होता है तब तक साध्य वाला पक्ष कहाता है। ब्रह्म से अन्य व्यापकत्व का निश्चय वाला न होने से व्यापकत्व का सपक्ष नहीं है अपरिच्छिन्नत्व हेतु की सपक्ष शून्य ब्रह्म रूप पक्ष में वृत्ति है इसलिये केवल व्यतिरेकी है। व्याप-कत्वाभाव व्यापक की अपरिच्छिन्नत्वाभाव प्रतियोगी अपरिच्छिन्नत्व वाला ब्रह्म है इस परामर्श से व्यापकत्व वाला ब्रह्म है यह अनुमिति होती है। साध्य हेतु के अन्वयव्याप्तिपूर्वक साध्य के अभाव की व्याप्ति जिस हेतु में होती है वह अन्वय व्यतिरेकी कहाता है जैसे जीव पराधीन है परिच्छिन्नत्व होने से। यहाँ जीव पक्ष है पराधीनत्व साध्य है परिच्छिन्नत्व हेतु है। जहाँ जहाँ परिच्छिन्नत्व है तहाँ तहाँ पराधीनत्व है यह अन्वय व्याप्ति है। अचेतन में परिच्छिन्नत्व पराधीनत्व हेतु साध्य है इस प्रकार व्यतिरेकी में परिच्छिन्नत्वाभाव व्यापक है पराधीनत्वाभाव व्याप्य है परिच्छिन्नत्वाभाव की व्याप्ति पराधीनत्वाभाव में रही सो पराधीनत्वाभाव व्यापक परिच्छिन्नत्वा-

भाव प्रतियोगीत्व सम्बन्ध से परिच्छिन्नत्व हेतु अन्वय व्यतिरेकी है अन्वय व्यतिरेकी हेतु पक्ष में सपक्ष में रहना चाहिये विपक्ष में नहीं रहना चाहिये वाध का विषय नहीं होना चाहिये असत्प्रतिपक्षित होना चाहिये। यहां परि-च्छिन्नत्व हेतु पक्ष जीव में सपक्ष अचेतन में है विपक्ष ब्रह्म में नहीं है पक्ष में अभाव वाला नहीं है सत्प्रतिपक्ष दोषवाला नहीं है। पर मत में प्रपंच मिथ्या है दृश्यत्व होने से यहाँ (आत्मावारे द्रष्टव्यः) इस श्रुति से मिथ्यात्व के विपक्षी ब्रह्म में दृश्यत्व है (विश्वं सत्यम्) विश्व सत्य है, इस श्रुति से प्रपंच में मिथ्यात्व न रहने से वाध दोष हो सपक्षाप्रसिद्ध होने से साध्य की अप्रसिद्धि पक्षासिद्धि है पक्ष में अवृत्त सपक्ष में अवृत्त असाधारण व्यभिचारी है। अतीन्द्रिय वस्तु में दृश्यत्वाभाव होने से भोगासिद्ध है मिथ्यात्वविरोधी नित्यत्व साधक प्रमाण विषयत्व से सत्प्रतिपक्षित है इत्यादि दोष होने से दृश्यत्व हेतु दुष्ट है। ऐसी ही मिथ्यात्व साधक जड़त्व परिच्छिन्नत्व हेतु ज्ञातव्य हैं। नहीं है विरोधी हेतु जिसको वह असत्प्रतिपक्ष है विरोधी हेतु है जिसको वह सत्प्रतिपक्ष है। अनुमान के २ अङ्ग है व्याप्ति पक्षधर्मता व्याप्ति से साध्य का निश्चय होता है। पक्ष में जो धर्म है उसमें पक्षधर्मता रहती है पक्षधर्मता हेतु में रहती है पक्षधर्मता से साध्य सम्बन्ध का पक्ष में निश्चय होता है। अनुमिति पक्ष विशेषक साध्य प्रकार साध्य विशेषक पक्षप्रकारक २ प्रकार होता है। व्यापकत्व वाला ब्रह्म है यहाँ व्यापकत्व रूप साध्य प्रकारक ब्रह्मरूप पक्षविशेषक अनुमिति होती है। ब्रह्म में व्यापकत्व है यहाँ बह्म रूप पक्ष प्रकारक व्यापकत्व रूप साध्य विशेषकानुमिति होती है आधेयत्व सम्बन्धेन पक्ष साध्य

में प्रकार है। और अनुमिति १ असमूहालम्बन होती है २ समूहालम्बन होती है। असमूहालम्वन कह चुके हैं साध्यवाला और साध्य व्याप्य हेतु वाला पक्ष है यह समूहालम्बनानुमिति है यह भी साध्य प्रकारक पक्ष विशेष्यक पक्ष प्रकारक साध्य विशेष्य भेद से द्विधा है। इस प्रकार अनुमिति चतुर्धा हुई। समूहालम्बनानुमिति में व्याप्ति पक्षधर्मता परामर्श सभी है। यह नैयायिक मानते हैं सिद्धान्त में समूहालम्बनानुमिति नहीं है समूहालम्बनानुमिति से काम चलता है तो अन्य मानना व्यर्थ है।

अनुमिति का अनुमिति कारण का विरोधी हेतु हेत्वाभास है। जो हेतु साधक नहीं है साधक मालूम होता है वह हेत्वाभास है। हेत्वाभास पंचधा है असिद्ध, विरुद्ध, अनैकान्तिक, प्रकरणसम, कालात्ययापदिष्ट। आश्रय की असिद्धिवाला आश्रयासिद्ध है। सो असिद्ध त्रिधा है आश्रयासिद्ध, स्वरूपासिद्ध, व्याप्यत्वासिद्ध। पक्ष में पक्षतावच्छेदकाभाव अश्रयासिद्ध है। जैसे मिथ्या प्रपंच बाधित है कल्पिततत्व होने से। यहाँ मिथ्या प्रपंच पक्ष है वाधितित्व साध्य है कल्पितत्त्व हेतु है मिथ्यात्व पक्षतावच्छेदक है। (विश्वं सत्यम्) इस श्रुति से मिथ्यात्वाभाव प्रपंच में है पक्ष में पक्षतावच्छेदक प्रकारक प्रपंच विशेषक मिथ्यात्वाभाव वाला प्रपञ्च है यह ज्ञान मिथ्या प्रपंच है इस अनुमिति का और वाधितत्त्व व्यापक कल्पितत्त्व वाला प्रपञ्च है यह परामर्श का विरोधी हुआ। परामर्शांश में पक्षताव-च्छेदक का वाध होने से वाधितत्त्व व्याप्यक कल्पितत्व वाला प्रपंच है इतने अंश से वाधितत्त्वानुमिति नहीं होती है जैसे आधुनिक स्थल में पक्ष पर्वत है पक्षता पर्वत में है पर्वतत्व भी पर्वत में है

समानाधिकरण सम्बन्ध से पर्वतत्व गया पक्षता में तब पक्षता का अवच्छेदक पर्वतत्त्व हुआ। आश्रयासिद्धि दोष अनुमिति परामर्श का विरोधी होता है। साध्य में साध्यतावच्छेदकअभाव साध्याप्रसिद्ध है जैसे प्रपञ्च वाधित सत्तावाला है कल्पितत्त्व होने से शुक्ति रजत समान। यहां प्रपञ्च पक्ष है वाधित सत्ता साध्य है कल्पितत्व हेतु है शुक्ति रजत दृष्टान्त है वाधितत्व साध्यतावच्छेदक है (विश्वंसत्यम्) इस श्रुति से सत्ता में वाधितत्वाभाव ज्ञान होने से अवाधित सत्तावाला प्रपञ्च है इस अनुमिति का और अवाधित सत्ता व्याप्य कल्पितत्त्व वाला प्रपञ्च है यह परामर्श का विरोधी हुआ। हेतु में हेतुतावच्छेदक प्रकारक निश्चय साधनाप्रसिद्ध है जैसे परमत में रजत कार्यकारी है पारमार्थिक रजतत्व होने से सुवर्ण समान। यहाँ रजत पक्ष है कार्यकारित्व साध्य है पारमार्थिक रजतत्व हेतु है सुवर्ण दृष्टान्त है। पारमार्थिकत्व ब्रह्म में है पारमार्थिकत्वाभाव वाला रजतत्त्व साधना-प्रसिद्ध हुआ। यह व्याप्ति परामर्श का विरोधी है। पक्ष में हेत्वभाव स्वरूपासिद्ध है। सो स्वरूपासिद्ध भागासिद्ध द्विधा है। स्वरूपासिद्ध जैसे-वाध्य सत्ता होने से विश्व मिथ्या है शुक्ति रजत समान। यहाँ विश्व पक्ष है मिथ्यात्व साध्य है वाध्य सत्ता हेतु है शुक्ति रजत दृष्टान्त है। (विश्वं सत्यम्) इस श्रुति से प्रपञ्च में अवाधित सत्ता होने से विश्व में बाधित सत्ताभाव है वाधित सत्ताभाव प्रकारक प्रपञ्च विशेषक निश्चय स्वरूपासिद्ध हुआ यह परामर्श का विरोधी है। पक्ष के एक देश में हेत्वभाव भागासिद्ध है। जैसे प्रपञ्च मिथ्या है दृश्यत्व होने से शुक्ति रजत तुल्य। यहाँ पक्ष के एक देश अतीन्द्रिय वस्तु में दृश्यत्वाभाव भागासिद्ध है। व्याप्यत्वासिद्ध का भेद उपाधि

है। साध्य की व्यापक हेतु की अव्यापक उपाधि होती है। उपाध्य-भाव हेतु से पक्ष में साध्याभाव की सिद्धि होती है। सो उपाधि चतुर्धा है केवल साध्य व्यापक, पक्ष धर्मता विशिष्ट साध्य व्यापक, हेतु विशिष्ट साध्य व्यापक, उदासीन धर्म विशिष्ट साध्य व्यापक। केवल साध्य व्यापक जैसे प्रपञ्च मिथ्या है दृश्यत्व होने से शुक्ति रजत तुल्य। यह उपाधि सपक्ष में रहती है पक्ष में तो साध्य का सन्देह रहता है। यहाँ शुक्ति रजत सपक्ष में पारिभाषिकत्वोपाधि है यहाँ ही मिथ्यात्व का निश्चय है साधन पक्ष में अव्यापक है, उपाधि पारिभाषिकाभाव हेतु से प्रपञ्च में साध्य मिथ्यात्वाभाव सिद्ध होता है। द्वितीय वायु प्रत्यक्ष है प्रमेयत्व होने से। यहाँ वायु पक्ष है प्रत्यक्षत्व साध्य है प्रमेयत्व हेतु है। यहां बाह्य द्रव्य प्रत्यक्षत्व घट में है। बाह्य द्रव्यत्व विशिष्ट प्रत्यक्षत्व व्यापकत्वाभावत्वोपाधि है। तृतीय ध्वंस नाशवान् है जन्यत्व होने से यहाँ ध्वंस पक्ष है विनाशित्व साध्य है जन्यत्व हेतु है। जन्यत्व रूप हेतु विशिष्ट विनाशित्व का व्यापक भावत्वोपाधि है। चतुर्थ प्रागभावाविनाशी है अजन्यत्व होने से। यहां प्रागभाव पक्ष है विनाशित्व साध्य है अजन्यत्व हेतु है। अजन्यत्व विशिष्ट विनाशित्व व्यापक भावत्व उपाधि है। साध्या-धिकरण में अवृत्ति साध्याभाव व्याप्य हेतु विरुद्ध है। जैसे घट नील है जलत्व होने से। यहाँ घट पक्ष है नील साध्य है जलत्व हेतु है। नीलाधिकरण घट में अवृत्ति नीलाभाव व्याप्य जलत्व है। जल में नीलाभाव है। यह साध्याधिकरणक धर्म का विरोधी है। साध्य का हेतु व्यभिचारी हेतु अनैकान्तिक है यही सव्यभिचार कहाता है सो त्रिधा है साधारण, असाधारण, अनुपसंहारी। साध्य समानाधिकरण

साध्याभाव वाले में वृत्ति हेतु साधारण है। जैसे प्रपञ्च मिथ्या है दृश्यत्व होने से जडत्व होने से परिच्छिन्नत्व होने से। यहाँ मिथ्यात्वा-भाव वाले ब्रह्म में (आत्मावारे द्रष्टव्यः) इस प्रमाण से दृश्य रहने से साधारण है। उपहित अविद्या विशिष्ट का एक देश चेतन में मिथ्यात्व नहीं है जड़त्व है। मिथ्यात्वाभाव वाला उपहित विशिष्ट के एक देश में जड़त्व होने से साधारण है। मिथ्यात्वाभाव वाले शुद्ध ब्रह्म में काल परिच्छिन्नत्व होने से परिच्छिन्नत्व हेतु साधारण है। जो हेतु साध्य वाले में साध्याभाव वाले में रहता है वह साधारण कहाता है। यह साधारण साध्याभाव वाले से अवृतित्वरूप हेतु में व्याप्ति विरोधी होता है। सपक्ष विपक्ष में अवृत्तिपक्ष मात्र में वृत्ति हेतु असाधारण है जैसे प्रपंच वाध्य है व्यावहारिकत्व होने से। यहाँ प्रपंच पक्ष है वाध्यत्वसाध्य है व्यावहारिकत्व हेतु है। शुक्तिरजत में वाध्यत्व का निश्चय है ब्रह्म में वाध्यत्वाभाव का निश्चय है सपक्ष शुक्ति रजत है विपक्ष ब्रह्म है व्यावहारिकत्व की विपक्ष में अवृत्ति है पक्षमात्र में वृत्ति है इसलिये व्यावहारिकत्व असाधारण है। साध्य समानाधिकरणत्वरूप हेतु में व्याप्ति विरोधी असाधारण है। अथवा साध्य का व्यापक जो अभाव उसका प्रतियोगी असाधा-रण है । जैसे प्रपंच मिथ्या है दृश्यत्व, जड़त्व, परिच्छिन्नत्व होने से। यहाँ (विश्वं सत्यम्) इस प्रमाण से प्रपंच में सत्यत्व है। प्रपंच में मिथ्यात्वाभाव है मिथ्यावन्ध्या पुत्र में है मिथ्यात्व का व्यापक दृश्यत्व, जड़त्व, परिच्छिन्नत्वाभाव है उस अभाव का प्रतियोगी दृश्यत्व, जड़त्व, परिच्छिन्नत्व असाधारण है। अन्वय व्यतिरेक दृष्टान्त रहित हेतु अनुप संहारी है सब अनित्य है प्रमेयत्व होने से।

यहाँ सब पक्ष है अनित्यत्व साध्य है प्रमेयत्व हेतु है। प्रमा विषयत्व प्रमेयत्व है। साध्य हेतु के सर्वत्र होने से अन्वय व्यतिरेक व्याप्ति नहीं है सपक्ष विपक्ष नहीं है सब पक्ष ही है। अन्वय व्यतिरेक दृष्टान्तरहित प्रमेयत्व हेतु अनुपसंहारी है यह हेतु प्रतियोगित्व प्रकारक ज्ञान का विरोधी है। साध्याभाव साधक अन्वय हेतु जिसको है वह प्रकरण सम है यही सत्प्रतिपक्ष कहाता है। सत्प्रतिपक्ष में साध्य प्रकारक साध्याभाव प्रकारक दो अनुमिति होती हैं, साध्य प्रकारक अनुमिति विरोधी साध्याभाव साधक हेतु है साध्याभाव प्रकारकानुमिति विरोधी साध्य साधक हेतु है यद्यपि दोनों हेतु आपस में विरोधी हैं विपरीतानुमिति का जनक न होने से साध्य का विरोधी है। जैसे प्रपंच मिथ्या है, अवस्तुत्व होने से दृश्यत्व, जड़त्व परिच्छिन्नत्व होने से प्रपंच नित्य है वस्तुत्त्व होने से। पक्ष में प्रपंच पक्ष है, मिथ्यात्व साध्य है दृश्यत्व, जड़त्व, परिच्छिन्नत्व हेतु हैं। पक्ष में प्रपंच पक्ष है नित्यत्व साध्य है वस्तुत्व हेतु है। सत्प्रतिपक्ष में एकांश यथार्थसाध्य रहता है जहाँ २ दृश्यत्व, जड़त्व, परिच्छिन्नत्व है वहाँ २ नित्यत्व है जैसे शुक्ति रजत में। जहाँ २ अवस्तुत्व है वहाँ २ मिथ्यात्व है जैसे वन्ध्या पुत्र में । नित्यत्व का विरोधी मिथ्यात्व साधक अवस्तुत्व हेतु सत्प्रतिपक्षित है। यह परामर्श साध्य का विराधी है। कलात्ययापदिष्टवाध है। पक्ष में साध्याभाव वाध है जैसे प्रपंच मिथ्या है दृश्यत्व, जड़त्व, परि-च्छिन्नत्व होने से, यहाँ (विश्वं सत्यम्) इस प्रमाण से प्रपंच में सत्यत्व होने से मिथ्यात्वाभाववाला प्रपंच है इस वाध से प्रपंच मिथ्या है यह अनुमिति वाधित हुई। इति अनुमान प्रकरणम्।

अथ शब्द प्रमाण निरूपणम्

आप्तप्रयुक्त वाक्य शब्द है। बुद्धिमन्दता, इन्द्रिय दुर्बलता विप्रलिप्सादि भ्रम हेतु रहित होते हुए यथार्थ वक्ता आप्त है। अतिशय आप्त वेद है। वेद, वेदार्थ स्मरण कर्ता मनु आदिक हैं। इनके वचनों को लेकर वेदार्थ विस्तार कर्ता आचार्य हैं। आचार्य प्रयुक्त वाक्य शब्द प्रमाण हैं। वह शब्द वृत्ति द्वारा अर्थ वोध करती है। परार्थाभिधान वृत्ति है। प्रकृति प्रत्ययाभिधेयार्थ भिन्न विशेष पदार्थ अभिधान है। जैसे 'माधव' यहाँ मा शब्द रमावाचक है धव शब्द पति वाचक है समासार्थ प्रत्यय है। धवपति का नित्य सम्बन्ध है अर्थ दो भिन्न हैं धवपति शब्द के वृत्ति यहाँ श्रीकृष्ण में हैं वृत्ति द्विधा है मुख्या, जघन्या। मुख्या वृत्ति शक्ति है अमुख्या वृत्ति लक्षणा है। पद पदार्थ सम्बन्ध रूप वाच्य वाचकत्वरूप शब्द वृत्ति शब्दार्थ प्रकाशन योग्य सामर्थ्यपदार्थान्तर है जैसे अग्नि वृत्ति दाहकता सामर्थ्यवाली स्वाभाविकी शक्ति है। शक्ति त्रिधा है रूढि, योग, योगरूढि। समुदाय शक्ति रूढि है। जैसे गौ नील है यहाँ गो की समुदाय शक्ति है। शब्द द्विधा हैं अनेकार्थ, पर्याय हरि गो शब्द अनेकार्थ हैं, हाथ कर शब्द पर्याय हैं। अवयव में शक्ति योग है जैसे माधव गोपीकान्त। यहाँ गोपीकान्त शब्द की शक्ति श्रीकृष्ण में है। अवयव समुदाय में शक्ति योगरूढि है जैसे विष्णु शब्द में। विष्णु शब्द का व्यापक अर्थ है अवयव शक्ति व्यापक में है समुदाय शक्ति रमाकान्त में है अर्थात् योग से व्यापकार्थ वोध होता है रूढि शक्ति से रमाकान्त का बोध होता है। शक्ति ज्ञान से

उपस्थिति शब्द अर्थ की होती है उपस्थिति से शाब्दबोध होता है शाब्दबोध में वाक्य ज्ञान पद ज्ञान कारण हैं। पदों का समुदाय वाक्य है। आकांक्षा, योग्यता, सन्निधि वाक्यार्थ ज्ञान में कारण हैं जिस पद के बिना जिस पद का अन्वयानुभव न होय उस पद के साथ उस पद की आकांक्षा होती है जैसे क्रिया बिना कारक पद शाब्दबोध का जनक नहीं होता है कारक पद बिना क्रियापद शाब्दबोध का जनक नहीं होता है। क्रिया कारक का आपस में अन्वय होता है क्रिया की आकांक्षा कारक में कारक की क्रिया में है। जो वर्तमान रहता है सोई शाब्दबोध में कारण होता है उच्चरित होय बा अनुच्चरित होय। जैसे "घटोऽस्ति" यहाँ घट पद अस्ति पद दो है घट पद अस्ति पद रहने से घट विशेष्यक अस्तित्व प्रकारक वोध होता है एक अनुच्चरित से भी वोध होता है गौ अश्व है यहाँ आकांक्षा के अभाव होने से शाब्दवोध नहीं होता है। पदार्थ सम्बन्धावाध योग्यता है। जल सेचन करता है यहां सिंचनकरणत्व का सम्बन्ध जल में है। सिंचन करणत्व का वाध जल में नहीं है। सिंचन करणत्व का अग्नि में वाध है। आपस में सापेक्षित पदों के अविलम्ब से उच्चारण सन्निधि है जैसे "घटोऽस्ति" यहाँ घटपदोच्चारण के समीप अस्तिपदोच्चारण है। प्रातः घटशब्दोच्चारण हो सायं में अस्तिपदोच्चारण होय तो आसत्यभाव होने से शाब्दबोध नहीं होता है। जघन्या लक्षणा वृत्ति है। जघन्या लक्षणा लक्षित लक्षणा भेद से द्विधा है। साक्षात् शक्य सम्बन्धरूपा लक्षणा है सो त्रिधा है जहत्स्वार्था अजहत्स्वार्था, जहदजहत्स्वार्था। शक्यार्थत्याग से शब्द सम्बन्धी अर्थ में वृत्ति जहत्स्वार्था है। जैसे गंगा में गृह है।

यहाँ गंगापद गृहपद दो हैं गङ्गापद का शक्यार्थ प्रवाह है प्रवाह का तीर के साथ संयोग सम्बन्ध है प्रवाह के सम्बन्धी तीर में गङ्गापद की लक्षणा होने से गङ्गा तीर में गृह है ऐसा वोध हुआ। शक्यार्थ न त्यागने से अन्यार्थ में वृत्ति अजहत्स्वार्था है। जैसे काकों से दधि की रक्षा करनी। यहाँ काकपद अपना काकरूप अर्थ न त्यागने से काकों से अन्य दधि भोजियों में काकपद की लक्षणा है काकपद शक्ति से अपने अर्थ के लक्षणा से मार्जारादि अर्थों का बोध करता है। शक्य के एक देश त्याग से अवशिष्ट शक्य का एक देश में वृत्ति अजहज्जहत्स्वार्था है। जैसे घट नित्य है यहाँ प्रत्यक्ष से घट में नित्यत्व बाध होने से घटत्व में नित्यत्व की लक्षणा हुई तब घटत्व नित्य है ऐसा अर्थ हुआ। यही भाग त्याग लक्षणा कहाती है। शक्य का परम्परा सम्बन्ध लक्षित लक्षणा है। जैसे भ्रमर पद में दो प्रकार हैं रकार रेफ कहाता है द्विरेफ पद का शक्य रेफ दो हैं रेफ दो का भ्रमर पद में सम्बन्ध है भ्रमर पद का मधुकर में सम्बन्ध है। द्विरेफ पद शक्य सम्बन्धी भ्रमर पदवाच्यत्व सम्बन्ध से द्विरेफ पद मधुकर में गया। द्विरेफ पद से लक्ष्यार्थ मधुकर का बोध हुआ। यहाँ गौणी वृत्ति कहाती है। सिंह देवदत्त है यहाँ सिंह पद का शक्य सिंह है सिंह में क्रूरादि गुण है इन गुणों का सम्बन्धी सिंह है क्रूरादि गुणों का देवदत्त में सम्बन्ध है। यहाँ सिंह वृत्ति क्रूरादि गुणों की लक्षणा से देवदत्त में वृत्ति है। अर्थ दो प्रकार के है शक्य लक्ष्य भेद से। शक्ति के विषय शक्य हैं। शक्य सम्बन्धी लक्षणों का विषय लक्ष्य है वस्तु मात्र की शक्ति ब्रह्म में है। इसलिये शक्ति का विषय ब्रह्म है। शक्ति ज्ञान व्याकरण, उपमान, कोष, आप्तवाक्य, व्यवहार,

वाक्यशेष, विवरण, सन्निधि से होता है। धातु प्रत्ययादिकों का शक्ति ज्ञान व्याकरण से होता है जैसे "चैत्रः पचति" चैत्र पकाता है पचति पच धातु आख्यात है आख्यात का कर्ता चैत्र में शक्ति है। उपमान से जैसे श्रीकृष्ण तुल्य प्रद्युम्न है श्रीराम तुल्य भरत हैं। यहाँ उपमान कृष्ण से प्रद्युम्न में उपमान श्रीराम से भरत में शक्ति ज्ञान होता है। कोष में जैसे नीलपद का नील रूप में शुक्ल पद का शुक्ल रूप में शक्ति ज्ञान होता है और नील विशिष्ट में शुक्ल विशिष्ट में शक्तिज्ञान होता है आप्तवाक्य से किसी यथार्थ वक्ता ने कहा कि कोकिल पिक का वाच्य है यहाँ कोकिल में पिक पद का शक्ति ज्ञान होता है। व्यवहार से जैसे किसी वृद्ध पुरुष ने कहा युवा पुरुष से कि घट लाओं तब युवा पुरुष घट ले आया उस वृद्ध के समीप एक बालक रहा उस बालक को घट में शक्ति हुई। वाक्यशेष से जैसे यवमय चरु होता है यहाँ यव पद का लम्बे टूंड वाले में शक्ति ज्ञान होता है। विवरण से जैसे पचाता है। इसका विवरण पाक करता है इससे आख्यात की पाक क्रिया कर्ता में शक्तिज्ञान होता है। सन्निधि से जैसे आम पर पिक मधुर शब्द करता है यहाँ आम्रपद सन्निधि से पिक शब्द की कोकिल में शक्ति ज्ञान होता है। तात्पर्य ज्ञान शक्ति ज्ञान में कारण होता है अन्यार्थ प्रतीतिमान इच्छा से अनुच्चरित की इच्छा विषय विषयकज्ञानोत्पत्ति जनक तात्पर्य है। सो तात्पर्य द्विधा है लौकिक और वैदिक। जैसे कोई पुरुष भोजन के समय कहता है कि सैन्धव लाओ। सैन्धव लवण, घोड़ा दोनों हैं घोड़ा भोजन काल का प्रयोजन नहीं है। यहाँ वक्ता की इच्छा का विषय लवण है। उससे अन्यार्थ अश्व है अश्व

विषयक प्रतीति मात्र इच्छा से अनुच्चरित वक्ता की इच्छा विषय लवण है लवण विषयकर्त्ता में उत्पत्ति जनक तात्पर्य विषय लवण में है। जैसे आकाश प्राण ज्योति आदि वैदिक शब्दों की रूढ़ी वृत्ति से भूताकाश वायु ब्रह्मादि में वृत्ति होने पर भी ब्रह्मसूत्र से यौगिक वृति से ब्रह्मपर है। श्रुति में इन शब्दों का तात्पर्य ब्रह्म में ही है। जैसे (आकाशस्त- ल्लिङ्गात्, प्राणस्तथानुगमात्, ज्योतिश्चरणाभिधानात्) इत्यादि सूत्रों से। भेदाभेदवाक्यों को बलाबल विचार से तुल्यबल सिद्ध होने पर भेद वाक्यों को पदार्थ भेद प्रतिपादन से परतंत्र सत्तावाले भेद में तात्पर्य है। अभेदवाक्यों को परतंत्र सत्ता वाले चेतनाचेतन पदार्थों के स्वतन्त्र सत्तावाले परब्रह्म श्रीकृष्ण पदार्थ के साथ तारतम्य सम्बन्ध में तात्पर्य है। उपक्रम, उपसंहार, अभ्यास, अपूर्वता, फल, अर्थवाद, उत्पत्ति ये सब ज्ञान में कारण होते हैं। और श्रुति वाक्यों का तात्पर्य ज्ञान में कारण है श्रुति उपबृंहित स्मृत्यादि है। श्रुति मूलस्मृति, भारत, पञ्चरात्र, वाल्मीकि रामायण हैं इनके अनुकूल भागवत पुराणादि प्रमाण हैं जो वेद बाह्यस्मृति है वह त्याज्य है जैसे कपिलादि स्मृति। वेद ही के दो काण्ड है पूर्व और उत्तर। पूर्व कर्म प्रतिपादक है उत्तर उपनिषद् है जो ब्रह्म स्वरूप और धर्म प्रतिपादक है। अन्य निरपेक्षित होने से स्वयं प्रमाण हैं। ऋग्यजुसामाथर्व चार वेद हैं इन वेदों के अङ्ग शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष, ये ६ हैं। शिक्षा नासिका है, व्याकरण मुख है, कल्प हाथ है, निरुक्त कान है, छन्द पाद है, ज्योतिष नेत्र है। अक्षर निश्चय कर्ता शिक्षा सूत्र ग्रन्थानुष्ठान योग्य श्रुति स्मृति क्रम प्रतिपादन पर कल्प है, स्वरवर्ण पदादि समर्थन

पर व्याकरण है, पूर्वार्थ प्रतिपादक निरुक्त है, अनुष्टुबादि छन्द हैं, अध्येयमानानुष्ठानादि काल निश्चय पर ज्योतिष है। इतर अन्वितार्थ में पद की शक्ति रहती है जैसे "घट लावो" यहाँ 'आनय' विशिष्ट घट में घट पद की शक्ति है जाति में शक्ति ज्ञाता है व्यक्ति में शक्ति स्वरूप से है।

इति शब्द निरूपणम्।

अथ प्रमाण विरोध परिहारः

उपमान अनुमानान्तर्गत है

सादृश्य ज्ञान उपमान है। उससे भिन्न होते हुए उसमें रहने वाला धर्म जिसमें है वह सदृश है। वह उपमान द्विधा है प्रत्यक्ष मूल, श्रुति मूल। प्रत्यक्ष जैसे चन्द्र सदृश मुख है। यहाँ चन्द्र से भिन्न चन्द्र में रहने वाला आह्लादकत्व सादृश्य मुख में है। यह मुख चन्द्र सदृश है आह्लादकत्व हेतु होने से अपर मुख समान। यहाँ दृष्ट मुख पक्ष है चन्द्र सदृशत्व साध्य है अपर मुख दृष्टान्त है। इस अनुमान से मुख में चन्द्र सदृशत्व की अनुमिति होती है। गो सदृश गवय है गो सदृशत्व हेतु होने से यहाँ गवय पक्ष है। गवयत्व साध्य है गो सदृशत्व हेतु है। श्रुति मूल जैसे संसार बन्धन रहित जीव ब्रह्म समान है। यहाँ मुक्त जीव को ब्रह्म सदृशत्व श्रवण है मुक्त जीव ब्रह्म सदृश है सर्वज्ञत्व अपहतपापत्वादि धर्माविर्भाव होने से वामदेव समान। यहाँ मुक्त जीव पक्ष है ब्रह्मसदृशत्व साध्य है सर्वज्ञत्वअप-हतपापत्वादि आविर्भाव हेतु है वामदेव दृष्टान्त हैं ब्रह्म से भिन्न ब्रह्म में रहने वाले सर्वज्ञत्व अपहतपापत्वादि धर्मी मुक्त जीव हैं।

अर्थापत्ति अनुमानान्तर्गत है

उपपाद्य ज्ञान से उपपादक ज्ञान समर्थन अर्थापत्ति है। देवदत्त दिन में भोजन नहीं करते हैं शरीर से स्थूल है यहाँ विना भोजन के स्थूल नहीं हो सकता है इसलिये रात्रि में भोजन करता है। स्थूलत्वोपपाद्य है स्थूलत्व ज्ञान कारण है भोजनोपपादक है भोजन ज्ञान साध्य है। देवदत्त रात्रि में भोजन करता है दिन में भोजनाभाव युक्त स्थूलत्व होने से यज्ञदत्त समान। यहाँ देवदत्त पक्ष है रात्रि भोजन साध्य है दिन भोजनाभाव युक्त स्थूलत्व हेतु यज्ञदत्त दृष्टान्त है। अनुमानान्तर्गत हुआ। अर्थ की कल्पना अर्थापत्ति कहाती है सो द्विधा है प्रत्यक्ष मूला, श्रुति मूला। प्रत्यक्ष प्रमाण के विषयोपपाद्य विषयक ज्ञान कारण प्रत्यक्षमूला है। प्रत्यक्षमूला जैसे देहादि बुद्धि पर्यन्त पदार्थ यदि अनात्मा न हो तो घटादिक ध्वंसाभाव प्रतियोगी भी नहीं है। यहाँ देहादि बुद्धि आदि पदार्थ पक्ष हैं ध्वंसाभाव प्रति-योगित्व साध्य है अनात्मत्व हेतु है घट दृष्टान्त है। इन्द्रिय मन बुद्ध्यादि यदि अनात्मत्व हों तो वसुला समान जाग्रतादि सर्वावस्था में अननुगत नहीं हों। यहाँ इन्द्रिय मन बुद्ध्यादि पक्ष है अनात्मत्व साध्य है जाग्रतादि सर्वावस्था अननुगतत्व हेतु है वसुला दृष्टान्त है। प्राण यदि बाह्यवायु जन्य न हो तो घटादि समान अचेतन नहीं हो। यहाँ प्राण पक्ष है बाह्य वायु जन्यत्व साध्य है अचेतनत्व हेतु है घटादि दृष्टान्त है। श्रुति प्रमाण विषयोपपाद्य विषयक ज्ञान करण श्रुतिमूलार्थापत्ति है। जैसे आत्मा यदि देहन्द्रियों से विलक्षण न हो तो घटादि समान अचेतन हो यहाँ आत्मा पक्ष है देहेन्द्रिय विलक्षण-त्व साध्य है चेतनत्व हेतु है व्यतिरेक दृष्टान्त घट है अन्वय दृष्टान्त

ब्रह्म है। जीव अज नित्य न हो तो कृतनाश अकृत प्राप्ति प्रसङ्ग निवृत्ति नहीं हो। यहाँ जीव पक्ष है अजत्व नित्यत्व साध्य है कृतनाश अकृत प्राप्ति प्रसङ्ग निवृत्ति हेतु है ब्रह्म दृष्टान्त है। जीव यदि पारमार्थिक सत्ता वाला न हो तो स्वस्वरूपापत्ति मोक्ष भागी नहीं हो। यहाँ जीव पक्ष है पारमार्थिक सत्ता साध्य है स्वस्वरूपापत्ति रूप मोक्ष भागित्व हेतु है। जीव यदि मोक्ष अन्वयी न हो तो अभयापत्ति रूप मोक्ष भागी न हो। जीव पक्ष है मोक्ष अन्वयित्व साध्य है अभयापत्ति रूप मोक्ष भागित्व हेतु है। जीव यदि ज्ञान स्वरूप न हो तो देहादि प्रकाशक नहीं हो। यहाँ जीव पक्ष है ज्ञान स्वरूपत्व साध्य देहादि प्रकाशत्व हेतु है। जीव यदि ज्ञान धर्म्मी न हो तो जीव में ज्ञान धर्मोपदेशक शास्त्र सार्थक्य न हो। यहाँ जीव पक्ष है ज्ञान साध्य है जीव में ज्ञान धर्मोपदेशक शास्त्र सार्थक्यत्व हेतु है। जीव यदि अणुपरिमाणी न हो तो मोक्ष स्वर्ग नरकादि में गति उपदेश न हो। यहाँ जीव पक्ष है अणु परिमाण साध्य है मोक्ष स्वर्ग नरकादि गति उपदेशत्व हेतु है। जीव यदि ब्रह्मात्मक न हो तो तादात्म्योपदेश न हो। यहाँ जीव पक्ष है ब्रह्मात्मकत्व साध्य है तादात्म्योपदेशत्व हेतु है। आकाशादि अचेतन यदि ब्रह्मात्मक न हो तो ब्रह्म का उपादेय कार्य न हो। यहाँ आकाशादि अचेतन पक्ष है ब्रह्मात्मकत्व साध्य है ब्रह्मोपादेय कार्यत्व हेतु है। वेदान्त शास्त्र प्रयोजन रूप मोक्ष यदि पारमार्थिक न हो तो स्वप्न सुखार्थ समान मोक्ष यत्न प्रवृत्ति न हो। यहाँ वेदान्त शास्त्र प्रयोजन रूप मोक्ष पक्ष है पारमार्थिकत्व साध्य है मोक्ष यत्न प्रवृत्ति हेतु है स्वप्न सुखार्थ व्यतिरेक दृष्टान्त है। शास्त्र प्रयोजन यदि पारमार्थिक न हो तो

स्वप्न सुखार्थ तुल्य मोक्ष प्रयोजनार्थ शास्त्रारम्भ न हो। यहाँ शास्त्र प्रयोजन पक्ष है पारमार्थिकत्व साध्य है मोक्ष प्रयोजनार्थ शास्त्रा-रम्भत्व हेतु है। स्वप्न सुखार्थ व्यतिरेक दृष्टान्त है। ब्रह्म सर्वज्ञत्वादि धर्मी न हो तो ईक्षण बहुभवन सङ्कल्पोपदेश न हो। यहाँ ब्रह्म पक्ष है सर्वज्ञत्वादिक साध्य है ईक्षण बहुभवन सङ्कल्पोपदेश हेतु है। ब्रह्म यदि सर्वज्ञत्वादिक साध्य हैं ईक्षण बहुभवन सङ्कल्पोपदेश हेतु है ब्रह्म यदि सर्वज्ञत्वादि धर्मी न हो तो जगदुपादान निमित्त कारण न हो। यहाँ ब्रह्म पक्ष है जगदुपादान निमित्तकारणत्व साध्य है सर्वज्ञत्वादिक धर्म हेतु हैं। ब्रह्म यदि सर्वात्मा न हो तो अपरिच्छिन्न भी न हो। यहाँ ब्रह्म पक्ष है सर्वात्मत्व साध्य है अपरिच्छिन्नत्व हेतु है। सर्वात्मा यदि वेद शब्द वाच्य न हो तो सर्व समानाधिकरणोपदेश न हो। यहाँ सर्वात्मा पक्ष है वेद वाच्यत्व साध्य है सर्व समानाधि-करणोपदेश हेतु हैं। जीव यदि कर्ता न हो तो पूर्वोत्तर वेदोपदेश सार्थक न हो। यहाँ जीव पक्ष है कर्तृत्व साध्य है पूर्वोत्तर वेदोपदेश सार्थकत्व हेतु है। ब्रह्मानुग्रह यदि ब्रह्म साक्षात्कार का असाधारण कारण न हो तो सर्वोपाय सार्थक न हो। यहाँ ब्रह्मानुग्रह पक्ष है ब्रह्म साक्षात्कार असाधारण कारणत्व साध्य है सर्वोपाय सार्थकत्व हेतु है। जीव यदि शुभाशुभ कर्म भागी न हो तो सृष्टि भी न हो। यहाँ जीव पक्ष है शुभाशुभकर्म भागित्व साध्य है, सृष्टि हेतु है। अचेतन यदि भोग्य न हो तो जीव का बन्धन न हो। यहाँ अचेतन पक्ष है भोग्यत्व साध्य है जीव बन्धनत्व हेतु है। अचेतन यदि ब्रह्माधीन न हो तो परिच्छिन्न भी न हो। यहाँ अचेतन पक्ष है ब्रह्माधीनत्व साध्य है परिच्छिन्नत्व हेतु है। इत्यादि अर्थापत्ति कार्य हेतुक अनुमान है

इस प्रकार अर्थापत्ति अनुमानान्तर्गत है।

अनुपलब्धि प्रत्यक्षान्तर्गत है

अभाव ज्ञान का कारण ज्ञान अनुपलब्धि है। अतीत ज्ञान विषयरूपा उपलब्धि है उपलव्ध्यभाव अनुपलव्धि है अभाव ज्ञान में अनुपलब्धि ज्ञान कारण है। जैसे भूतल में घटाभाव ज्ञान होता है उस ज्ञान का कारण घट की अनुपलब्धि है, जिसका प्रत्यक्ष होता है उसकी अनुपलब्धि अभाव ज्ञान में कारण है। जैसे घट का प्रत्यक्ष होता है। घटानुपलब्धि घटाभाव ज्ञान में कारण है। सो अनुपलब्धि प्रत्याक्षान्तर्गत है। घट प्रत्यक्ष होने से घटानुपलब्धि घटाभाव रूप ही है अन्यानुपलब्धि नहीं है। घटाभाव का भूतल में प्रत्यक्ष होता है इसलिये अनुपलब्धि प्रत्यक्ष है। जीव में परमेश्वरत्वाभाव। सर्वज्ञ ब्रह्म में अज्ञानाभाव अध्यासाभाव जीवत्वाभाव। स्वतन्त्र ब्रह्म में परतन्त्रत्वाभाव परतंत्र जीव में स्वतंत्रत्वाभाव। जीव में जन्मादि विकाराभाव। अज्ञानाध्यास में प्रमाणाभाव। जगत् कारण ब्रह्म में नानात्वाभाव। निर्विशेष ब्रह्म में प्रमाणाभाव प्रतिविम्ब में योग्यताभाव अज्ञानाश्रय में योग्यताभाव अज्ञान में विषयत्वाभाव। अवाच्य ब्रह्म में लक्ष्यत्वाभाव। सद्रूप कार्य में अनिर्वचनीयत्वाभाव। अनिर्वचनीय में प्रमाणाभाव इत्यादि अभाव अनुमान शब्दान्तर्गत है।

असम्भव पौराणिक मानते हैं सो अनुमान के अन्तर्गत है

खारी परिमाण में द्रोण का सम्भव होता है ब्राह्मण में विद्या का सम्भव है। इत्यादि सम्भव प्रमाण हैं। सो अनुमान प्रमाण ही है। खारी द्रोण वाली है खारीत्व होने से। यहाँ खारी पक्ष है द्रोण साध्य है खारीत्व हेतु है। इस समय सब ब्राह्मणों में विद्या का सम्भव नहीं है अन्य युग में सब ब्रह्मणों में विद्या रही अन्य युग ब्राह्मणत्व होने से। यहाँ अन्य युग ब्राह्मण पक्ष है विद्या साध्य है अन्य युग ब्राह्मणत्व हेतु है अनुमान ही सिद्ध हुआ।

ऐतिह्य प्रत्यक्ष शब्द प्रमाणान्तर्गत है

इस वट के ऊपर यक्ष रहता है ऐसा लोग परम्परा से कहते आये हैं यह ऐतिह्य कहाता है। सो देखने वाले को सन्देह है यदि कोई धूर्त कहता है तो अप्रामाणिक है। यदि किसी सत्यवादी ने देखा है तो उसके कहने से लोक में प्रचार है तो शब्द प्रमाणान्तर्गत ही है।

चेष्टा प्रमाणानुमानान्तर्गत है

देवदत्त के भीतर सुख, मुख प्रसन्नता से अवगत होता है। यज्ञदत्त के भीतर दुःख, मुख मलीनता से परिज्ञान होता है यह चेष्टा प्रमाण है सो अनुमान ही है। यहाँ देवदत्त पक्ष है सुख साध्य है मुख प्रसन्नता हेतु है। यज्ञदत्त पक्ष है दुःख साध्य है मुख मलीनता हेतु है। जहाँ जहाँ मुख प्रसन्नता है वहाँ वहाँ सुख है जहाँ जहाँ मुख मलीनता है वहाँ वहाँ दुख है। तथापि सुख दुःख जीव में है,

प्रसन्नता मलीनता शरीर में है। स्वाश्रयावच्छेद्यत्व सम्बन्ध से मुख प्रसन्न तो मलीनता जीव में गये। स्वमुख प्रसन्नता मलीनता स्वाश्रय शरीर शरीरावच्छेद्यत्व जीव में है। इस प्रकार हेतु सद्हेतु हुये।

अथ सामन्य विशेष पदार्थ विचार

प्रमेय द्विधा है द्रव्य अद्रव्य। द्रव्योपादान है। अवस्थाश्रय द्रव्य है अथवा गुणाश्रय द्रव्य है। द्रव्य ६ प्रकार का है, प्रकृति, काल, शुद्धसत्त्व, धर्मरूपज्ञान, जीव ईश्वर। सो द्रव्य द्विधा है जड़, अजड़। अमिश्रित सत्त्व शून्य जड़ है। सो जड द्विधा है प्रकृति काल। त्रिगुणाश्रय प्रकृति है। सो प्रकृति नित्य है क्षर, अविद्या, माया, शब्द वाच्य है। उस प्रकृति में श्रीकृष्ण सङ्कल्प से त्रिगुण विभाग होने से कार्योन्मुखावस्था प्रकृति अव्यक्ति कहाती है। उस अव्यक्त से महत्तत्वोत्पन्न हुआ। महत्तत्त्व त्रिधा है सात्विक, राजस तामस। महत्तत्त्व से अहङ्कारोत्पन्न हुआ वह भी त्रिधा है सात्त्विक राजस, तामस। इस अहङ्कार का वैकारिक तैजस भूतादि नाम भी है। वैकारिक राजसाहंकार सहित सात्त्विकाहंकार से एकादशेन्द्रियां हुई। सात्त्विककाहंकार की कार्य द्रव्य इन्द्रिय है। इन्द्रिय द्विधा है ज्ञानेन्द्रिय, कर्मेन्द्रिय। ज्ञान प्रसरण सामर्थ्य ज्ञानेन्द्रिय है। ज्ञानेन्द्रिय ६ प्रकार की हैं मन, श्रोत्र, चक्षु, रसना, घ्राण त्वक्। स्मृत्यादिकरणे-न्द्रिय मन है देह में रहता है बुद्धि अहंकार चित्त शब्द वाच्य बन्धनमोक्ष का कारण है। शब्दादि के मध्य में शब्दमात्र ग्रहण कर्ता इन्द्रिय श्रोत्र है। कान के छिद्र में मनुष्यों के रहती है। द्विजिह्वा सर्पादि के नेत्र में रहती है। रूप मात्र ग्रहण कर्ता इन्द्रिय चक्षु है सब

के नेत्र में रहती है। गन्धमात्र ग्रहण कर्ता इन्द्रिय घ्राण है। नासिका के अग्रभाग पर रहती है। रस मात्र ग्रहण कर्ता इन्द्रिय रसना है जिह्वा के अग्रभाग पर रहती है। स्पर्शमात्र ग्रहणकर्ता इन्द्रिय त्वचा है सब शरीर में रहती है। श्रोत्रादि इन्द्रियों को विषय के साथ सम्बन्ध कहीं पर संयोग हैं। कहीं पर संयुक्ताश्रयत्व है। घर में संयोग है घट रूप में संयुक्ताश्रयत्व है। रूपत्व में संयुक्ताश्रयाश्रयत्व है ऐसा ही सर्वत्र है। उच्चारणादिकों में अत्यन्त क्रिया सामर्थ्य वाली कर्मेन्द्रियाँ हैं। कर्मेन्द्रियां पञ्चधा हैं वाक्, पाणि, पाद, गुदा, उपस्थ। वर्णोच्चारण करणेन्द्रिय वाक् है हृदय, कण्ठ, जिह्वामूल, तालु, दन्त, ओष्ठ, नासिका, मूर्धा स्थान में रहती हैं। शिल्पादि करणेन्द्रियां पाणि हैं। मनुष्यों की उंगुलियों में रहती हैं हाथी आदि के नाक पर रहती हैं। गमन करणेन्द्रिय पाद है मनुष्यों के पग में रहती हैं सर्पादिकों की छाती में रहती हैं पक्षियों के पङ्ख में रहती है। मलादित्याग करणेन्द्रिय गुदा है कच्छप आदिकों के मुख में रहती है वे मुख से ही मल त्याग करते हैं आनन्द करणेन्द्रिय उपस्थ है लिङ्ग में रहती है। ये सर्वेन्द्रियां अणु हैं प्रत्यक्ष नहीं होती हैं। अन्य शरीर प्रवेश में वा स्वर्ग नरक गमन में जीव के साथ ये सर्वेन्द्रियां जाती हैं। मोक्षकाल में अप्राकृत देश में गमनासम्भव होने से इसी लोक में प्रलय पर्यन्त रहती हैं राजसाहंकार के सहित भूतादि संज्ञकतामस अहङ्कार से शब्दादि पंचतन्मात्राऐं आकाशादि पञ्च भूतोत्पन्न होते हैं। जैसे दधि रूप से परिणत दूध की मध्यमावस्था होती है वैसे भूत रूप से परिच्छिन्न द्रव्य की पूर्वावस्था युक्त द्रव्य तन्मात्रा कहाती है। तन्मात्रा-शब्द तन्मात्रा, स्पर्श तन्मात्रा, रूप

तन्मात्रा, रस तन्मात्रा, गन्ध तन्मात्रा ये पांच हैं। भूत पञ्चधा है आकाश, वायु, तेज, पृथ्वी, जल। तामसाहंकार आकाश के मध्यावस्था युक्त द्रव्य शब्द तन्मात्रा हैं। आकाश वायु के मध्यावस्था युक्त द्रव्य स्पर्श तन्मात्रा है। तेज के मध्यावस्था युक्त द्रव्य रूप तन्मात्रा है। तेज जल के मध्यावस्था युक्त द्रव्य रस तन्मात्रा है जल पृथ्वी के मध्यावस्था युक्त द्रव्य गन्ध तन्मात्रा है। शब्द तन्मात्रा से आकाश की, स्पर्श तन्मात्रा से वायु की, रूप तन्मात्रा से तेज की, रस तन्मात्रा से जल की, गन्ध तन्मात्रा से पृथ्वी की, उत्पति हुई। स्पर्श रहित शब्दाधार आकाश है। आकाश का भोग श्रोत्र है। आकाश में नील की प्रतीति होती है इसलिये आकाश का प्रत्यक्ष होता है। पञ्चीकरण प्रक्रिया से आकाश में रूप है। सूर्य परिस्पन्द से आकाश का ही पूर्वोत्तर पश्चिम दक्षिण व्यवहार होता है। अन्य कोई द्रव्य दिशा नहीं है। अनुष्णाशीत स्पर्श वाला रूप रहित वायु है। देश काल वस्तु सम्बन्ध से वायु में शीतोष्ण स्पर्श गन्ध की प्रतीति होती है। वायु के भोग्य चार इन्द्रिय हैं। शब्द स्पर्श गुण वायु में रहते हैं। वायु का भाग प्राण वायु है। सो दशधा है प्राण, अपान, उदान, व्यान, समान, नाग, कूर्म, वाराह, देवदत्त, धनञ्जय। जीवों के हृदय में प्राण, नाभि में समान, गुदा में अपान, कण्ठ में उदान, शरीर मात्र में व्यान, नाभि में नाग, पद में कूर्म, नासिका के अग्र भाग पर वाराह, पृष्ठ में धनञ्जय, और देवदत्त मस्तक में रहते हैं। इनकी अधिक व्यवस्थिति गीता द्वितीयाध्याय (तत्त्वदर्शिभिः) इसकी टीका निम्बार्कमतार्थ प्रकाशिका में हैं। अचर वृक्षादि जीवों में प्राण, समान, व्यान ही रहते हैं। इन सब वायुओं

का प्रत्यक्ष होता है। उष्ण स्पर्शमान भास्वर रूप वाला तेज हैं सो बाहर पचनादि कारण अग्नि सूर्य्य चन्द्रादि हैं। रोटी अग्नि से पकती है धान, गेहूँ, फलादि सूर्य्य से पकते हैं। चन्द्रमा में तेज है सो चन्द्र किरण द्वारा जल वर्षता है इसलिये सङ्कुचित रहता है शरीर के भीतर जठराग्नि तेज है सो भक्ष्य, भोज्य, चोस्य लेह्य, चतुर्धा अन्न पचता है। भात आदि भोज्य हैं। चना आदि भक्ष्य है जिसका दांत से दबाकर रस निकाला जाता है वह चोस्य है। जैसे ऊख। जो पान किया जाता हैं वह लेह्य हैं जैसे जल, दूध हविष। सो तेज चतुर्धा हैं भौम, दिव्य, औदर्य, आकरज। पृथ्वी मात्र जिसका इन्धन है वह दिव्य हैं जैसे सूर्यादि। अन्न जलादि जिसका इन्धन है वह औदर्य है जैसे जठराग्नि। इन्धन रहित आकरज है। जैसे सुवर्ण चांदी। सुवर्ण रजत में पृथ्वी का सम्बन्ध होने से उष्ण स्पर्शाभाव है। तेज द्विधा है प्रभा अप्रभा। प्रसारित तेज प्रभा है आवरण होने से सङ्कोच है। आवरण न रहने से विकाश है। प्रभा प्रभावाले के साथ उत्पन्न होती है साथ ही नष्ट होती है। द्रव्य स्वरूप और गुण स्वरूप सावयव हैं। प्रभायुक्त तेज प्रभाव वाला है।तेज शब्द उष्ण स्पर्श रूप गुण वाला है। शीतस्पर्श वाला गन्ध रहित, मधुररस वाला जल है जल में शीत, स्पर्श, शुक्ल, मधु, रस, गुण रहते हैं और अन्य के सम्बन्ध से विचित्र होते हैं। वह जल, समुद्र, नदी आदि रूप से अनेक प्रकार के हैं। शब्द स्पर्श रूप रस वाला जल सिंचन पिण्डी कारणादि कारण है। स्पर्श रूप रस गन्ध गुणवाली पृथ्वी है। यह सुरभि मधुर कृष्णादि रूपानुष्णाशीत स्पर्श वालीहै। इसका पाक होने से विचित्र रूप रस होते है। मृत्तिका, पाषाण औषध भेद से अनेक प्रकार की

है। तम पृथ्वी के अन्तर्गत है। नील रूप होने से। जैसे पाषाण में गन्ध उपलब्ध नहीं होती है। तैसे ही तम में सूक्ष्म गन्ध होने से उपलब्ध नहीं होता है। आकाश भाव अथवा अन्य द्रव्य नहीं है। सर्व भूतों में पंचीकरण प्रक्रिया से शब्दादि गुण रहते हैं। किसी में अल्प किसी में अधिक, अधिक होने से उसमें उसका व्यवहार होता है। पञ्चीकरण प्रक्रिया परब्रह्म श्रीकृष्ण भूतों की सृष्टि कर एक एक भूत के दो भाग कर एक एक भाग रख कर द्वितीय भाग को चार भाग कर, एक एक भाग एक एक भूत में मिलाते हैं। जैसे आकाश के दो भाग कर एक भाग रख कर एक भाग में ४ भाग कर एक भाग वायु में, एक तेज में, एक जल में, एक पृथ्वी में मिलाते हैं। वायु के दो भाग कर एक में ४ भाग कर एक एक आकाश, तेज, वायु, जल, पृथ्वी में मिलाया। इसी प्रकार सबका विभाग कर सब में मिलाया। पंचभूतों को आपस में मिलाना पञ्चीकरण कहाता है। इस रीति से सब में सब गुण मिले हैं। आकाश में रूप गन्ध है, पृथ्वी में शब्द है। आकाश में अपना भाग अधिक होने से आकाश कहाता है। वायु में अपना भाग अधिक होने से वायु कहाता है ऐसे ही तेज जलादि में ज्ञातव्य है। और वेद में त्रिवृत्करण कहाते हैं। तेज, जल, पृथ्वी इनको दो दो विभाग कर एक भाग में तीन भाग कर एक एक में मिलाना । जैसे तेज के दो भाग कर एक एक में ३ भाग कर एक भाग वायु में, एक जल में, एक पृथ्वी में। ऐसा ही जल पृथ्वी ज्ञातव्य है। यह त्रिवित्करण पञ्चीकरणोपलक्षण है भूतों के साथ बुध्यहङ्कार मिश्रित कर सप्तीकरण होता है। जैसे बुद्धि के दो भाग कर एक भाग में ६ भाग कर एक भाग अहङ्कार में

एक भाग आकाश में, एक वायु में, एक तेज में, एक जल में, एक पृथ्वी में। ऐसे ही अहङ्कार, आकाश, वायु, तेज, जल, पृथ्वी ज्ञातव्य हैं। प्रकृति बुद्धि से लेकर भूत पर्यन्त २४ हुए। इनमें से प्रकृति, बुद्धि अहङ्कार, पञ्चभूत इन समुदाय से शरीर होता है। एकादशेन्द्रियाँ एक एक अनेक हैं आभूषण रत्न समान एक एक पुरुष के भिन्न भिन्न हैं शरीराच्छादन कर रहे हैं। चेतन के प्रति आधेय विधेय शेष नियम से अपृथक् सिद्ध शरीर है। शरीर द्विधा है नित्य, अनित्य, प्रकृति, काल, जीव, मङ्गलाश्रय, श्रीकृष्ण एवं नित्यमुक्त सुदर्शन गरुडादि के शरीर नित्य हैं। अनित्य शरीर द्विधा है। कर्मकृत्, अकमकृत्, महदादिरूप परमेश्वर शरीर अकर्म-कृत् है। गरुड़ादि शरीर अपनी इच्छाग्रहीत अनेक प्रकार के हैं। कर्मकृत शरीर द्विधा है। अपने संकल्प सहित कर्मकृत् केवल कर्मकृत् भेद से। सौभरि प्रभृति के शरीर स्वसंकल्प सहित कर्मकृत हैं। केवल कर्मकृत् द्विधा है स्थावर, जङ्गम। शिला, वृक्षादिलता का शरीर स्थावर है। जङ्गम शरीर चार प्रकार का है देव, मनुष्य, सर्पादि नारकी भेद से। इन्द्रादिदेव शरीर है। ब्राह्मणादि मनुष्य शरीर है। सर्पादि शरीर प्रसिद्ध है नरक में रहने वाले का नारकी शरीर है। उद्भिज, स्वेदज, जरायुज, अण्डज शरीर अयोनिज हैं। असुर, यक्ष, राक्षासादि भी देवयोनि हैं। भूलोक में रहने वाले ब्राह्मणादि मनुष्य योनि हैं। मृग, पक्षी, सर्पादि तिर्यग्योनि हैं। पञ्चीकृत भूतों से अण्डोत्पन्न हुआ जैसे मृत्तिका में जल मिलाकर मनुष्य गोला बनाता है वैसे श्रीकृष्ण पञ्चीकृत भूतों को मिलाकर एक अण्ड बनाते हुए। अण्डोप्तत्ति के प्रथम जो सृष्टि रही सो समष्टि सृष्टि है अण्डोत्पत्ति

वाद जो सृष्टि हुई सो व्यष्टि सृष्टि है। उस अण्ड में प्रवेश कर श्रीकृष्णजी ने सृष्टि का विस्तार किया। जैसे पद्माकार भूत है उसके कर्णिकाकार मेरु है मेरु दक्षिण, भारत किं पुरुष हरि वर्ष तीन हैं। मेरोरुत्तर रम्यक हिरण्यक, कुरु तीन वर्ष हैं। मेरु के अग्र में भद्रास्ववर्ष है। मेरु के पीछे केतुमालवर्ष है। मेरु के मध्य में इलावृत्त है। इस प्रकार ६ वर्ष युक्त लक्ष योजन विस्तृत जम्बू द्वीप है, लक्ष योजन लवण समुद्र घिरा है वह समुद्र दो लक्ष योजन विस्तृत सातवर्षात्मक प्लक्ष द्वीप से घिरा है। प्लक्ष द्वीप भी ऊखरस समान रस वाले समुद्र से घिरा है। वह समुद्र शाल्मलि द्वीप से घिरा है। शाल्मलि द्वीप भी मदिरा समुद्र से घिरा है। मदिरा समुद्र कुश द्वीप से घिरा है। कुश द्वीप घृत समुद्र से घिरा है। घृतसमुद्र क्रौंच द्वीप से घिरा है। क्रौंच द्वीप दधि समुद्र से घिरा है वह शाक द्वीप से घिरा है, वह दुग्ध समुद्र से घिरा है, दूध समुद्र-वर्ष दोनों का विभाग कर्ता वलयाकार मानसोत्तर पर्वत सहित पुष्कर द्वीप से घिरा है, वह जल समुद्र से घिरा है। ऐसे उत्तरोत्तर द्विगुण जानना चाहिये। प्लक्ष द्वीपादि पांच सात वर्ष वाले हैं। सप्तद्वीपात्मक यह द्विगुण कांचन भूमि से घिरा है वह लोकालोक पर्वत से घिरा है, लोकालोक पर्वतान्धकार तम से घिरे हैं। अन्धकार तम गुड जहाज से घिरा है। जल, अण्डकटाह से घिरा है। भूमि के नीचे तल, अतल, वितल, सुतल, तलातल, रसातल पाताल ये सप्त लोक हैं। इसके नीचे नरक है पापियों का पाप भोग स्थान रौरवादि नामक २१ हैं। भूलोक से एक लक्ष ऊपर सूर्यमण्डल है यही भुवः लोक है इससे ऊपर चन्द्र मण्डल है चन्द्र मण्डल के ऊपर नक्षत्र लोक सप्तर्षिमण्डल

है। सब के ऊपर ध्रुव हैं। सूर्य मण्डल से ध्रुव लोक तक, स्वः लोक है इससे चार लक्ष योजन ऊपर कोटि योजन तक ऊचा महर्लोक है इससे द्विगुण जन लोक है, इससे ऊपर चतुर्गण तप लोक है, इससे ऊपर १२ कोटि योजन सत्यलोक है, इससे ऊपर तम, गडहा, जल, अण्डकटाह है। इस प्रकार टेढाई ऊपर लम्बाई लेकर पञ्चाशत कोटि योजन भूति है अण्डकटाह कोटि योजन ऊंचा है। वह अण्डकटाह १० उत्तर आवरण से घिरा है। इस प्रकार अण्डकटाह अनेक हैं जल बुद्‌बुद् समान एक काल में श्रीकृष्ण रचित हैं। इसका विस्तार श्रीपुरुषोत्तमाचार्यजी ने वेदान्त रत्न मञ्जूषा में लिखे हैं। वेदान्त में अभाव कोई अन्य पदार्थ नहीं है किन्तु भाव स्वरूप ही है। प्रलयक्रम पृथ्वी जल में, जल तेज में, तेज वायु में, वायु आकाश में, आकाश इन्द्रियों में इन्द्रियाँ तन्मात्रा में, तन्मात्रा अहंकार में, अहंकार महत्तत्व में, महत्तत्त्व अव्यक्त में, अव्यक्त जीव में, जीव तम में, तम श्रीकृष्ण में लय होते हैं। घट का प्रागभाव मृत्तिका पिण्ड है ध्वंसाभाव कपाल रूप है। अन्योन्याभाव प्रतियोगी रूप है अत्यन्ताभाव अधिकरण रूप है। अचेतन द्रव्य सत्यादि गुण रहित काल है वह नित्य व्यापक है त्रिधा है, भूत भविष्य, वर्तमान एक वार शीघ्र विलम्ब व्यवहार का कारण है। निमेष, काष्ठा, मुहूर्त, दिन, पक्ष, मास, ऋतु, उत्तर, दक्षिण अयनवर्षादि व्यवहार का कारण है। नेत्र का पलक एक वार गिरता है उतना समय निमेष कहाता है। १५ निमेष की एक काष्ठा, ३० काष्ठा की एक कला, ३० कला का एक मुहूर्त, ३० मुहूर्त का दिन, ३० दिन का मास, मास में आदि १५ दिन कृष्ण पक्ष है, अन्त १५

दिन शुक्ल पक्ष हैं। दो मास की ऋतु होती है, ३ ऋतु का एक अयन, दो अयन का वर्ष होता है। इस वर्ष से सौ वर्ष तक मनुष्य की आयु है, अधर्म वृद्धि से आयु क्षीण हो जाती है। मनुष्यों का मास पितृ का दिन है, मनुष्यों की अमावस्या पितृ का मध्याह्न है। मनुष्यों का शत वर्ष देवों का दिन है। देवों का उत्तरायण दिन है दक्षिणायन रात्रि है। इस प्रकार देवों के १२ सहस्र वर्ष ४ युग हैं। ४ सहस्र वर्ष सत्ययुग है, उसमें पूर्ण धर्म है। तीन सहस्र वर्ष त्रेता युग है, उसमें धर्म त्रिपादी हो जाता है। दो सहस्र वर्ष द्वापर है उसमें धर्म द्विपद होजाता है। १ सहस्र वर्ष कलियुग है इसमें धर्म एक ही पाद शेष रह जाता है। इन युगों की सन्धि सहस्र २ वर्ष पर्यन्त की होती है। सत्ययुग की पूर्व सन्धि ४ शत वर्ष की होती है उत्तर सन्धि चार शत वर्ष की होती है। त्रेता की पूर्व सन्धि तीन शत वर्ष की होती है उत्तर सन्धि तीन शत वर्ष की होती है। द्वापर की पूर्व सन्धि दो शत वर्ष की होती है उत्तर सन्धि दो शत वर्ष की होती हैं। कलियुग की पूर्व सन्धि एक शत वर्ष की एवं उत्तर सन्धि एक शत वर्ष की होती है। चार युग सहस्र वार बीतने पर ब्रह्मा का एक दिन होता है, ऐसे ही सहस्र वार बीतने पर ब्रह्मा की एक रात्रि होती है। ब्रह्मा के एक दिन में १४ मनु, इन्द्र सप्तर्षि होते हैं। एक एक मनु इकत्तर २ युग रहते हैं। ब्रह्मा के दिन से उनकी शत वर्ष आयु है। इत्यादि सर्वकालाधीन हैं। नित्य नैमित्तिक, प्राकृत, प्रलय, लय, कालाधीन हैं। काल स्वकार्य निमेषादि प्रति उपादान कारण है। निमेषादि काल अनित्य हैं अखण्डकालनित्य। ऐसे काल श्रीकृष्ण की क्रीड़ा का सहकारी है। अवतार काल में श्रीकृष्ण कालानुसार

कार्य करते हैं नित्य विभूति में काल के रहने पर भी काल निरपेक्षित स्वतन्त्र कार्य करते हैं। इति।

शुद्धसत्त्व धर्म रूप ज्ञान जीव ब्रह्म साधारण है अजड़ है। स्वयंप्रकाश अजड़ है। विभूति ऊपर नीचे भेद से अनेक हैं। नीचे परिच्छिन्न है अचेतन स्वयंप्रकाश है। आनन्दप्राप्ति का कारण होने से आनन्दात्मिका है। वह विभूति नित्य मुक्तों का श्रीकृष्ण संकल्प से भाग भोगकरण भोग स्थान है। भोग्य श्रीकृष्ण शरीरादि हैं। भोगोपकरण चन्दन पुष्पादि हैं। भोगस्थान गोपुर प्राकार मण्डपादि हैं। श्रीकृष्ण के एवं नित्यमुक्तों के शरीर श्रीकृष्ण के नित्येच्छा से सिद्ध हैं। मुक्तों के शरीर मुक्तों के पित्रादि सृष्टि, एक काल में श्रीकृष्ण संकल्प से अनेक होते हैं। व्यूह श्रीकृष्ण श्री कृष्णावतारों का शरीर अप्राकृत है। प्रतिष्ठावाद श्रीकृष्ण के सत्य संकल्प से अप्राकृत शरीराविर्भाव होता है। मुक्तों का शरीर श्रीकृष्ण सेवार्थ है। श्रीकृष्ण शरीर नित्य निरतिशय स्वच्छ सौन्दर्य, सुगन्ध, सुकुमार, लावण्य, मृदु, कोमल, दिव्य, मंगलैश्वर्य, धर्म यश, श्री, ज्ञान, वैराग्य, समान अतिशय रहित व्यापक है। अप्राकृत शब्द स्पर्शादि ज्ञान धर्म्मी ज्ञान स्वरूप है। और उनके पुरुष कौस्तुभ स्वरूप हैं। प्रकृति श्रीवत्स है, महत्तत्त्व गदा है, सात्त्विकाहंकार शंख है, तामसाहंकार शार्ङ्ग है, ज्ञान खड़ग है, अज्ञानावरण है। मन चक्र है, ज्ञान कर्मेन्द्रियाँशर है, स्थूल सूक्ष्म भूत वनमाला है। वह विभूति आमोद, प्रमोद, सम्मोद गोलोकरूप से चतुर्धा है अनन्त है, त्रिपाद विभूति परमपद, परमव्योम, परमाकाश, अमृतनाक, अप्राकृत लोकानन्दलोक, गोलोक, वैकुण्ठ साकेतादि शब्दवाच्य हैं। इस

विभूति में १२ आवरण युक्त अनेक गोपुर प्राकारों से घिरा गोलोक है। उस गोलोक में आनन्द नामक एक दिव्यस्थान है उसमें रत्नमय अनेक स्तम्भों से विरचित महामणि मण्डप सभा है। उसमें अष्टदल कमल है, उस कमल में षट्कोण है। अग्नि कोण में हृदय नैऋत्य में शिर, पश्चिम में नेत्र, वायु में शिखा, ईशान में कवच, पूर्व में अस्त्र हैं। कमल के मध्य में आधार, शक्ति, प्रकृति, कमठ, शेष, क्षमा, क्षीर, सिन्धु, श्वेतद्वीपरत्न, कल्पवृक्ष, अनन्त है। द्वादश कला सूर्य मण्डल षोडशकला चन्द्र मण्डल, दशकला अग्नि मण्डल त्रिगुणात्मान्तरात्मा परमात्मा ज्ञानात्मा है। अनुग्रहा विमलोत्कर्षणी ज्ञानाक्रिया योग प्रह्वा सत्या ईशान्या हैं। क्रम से हैं। वासुदेव- श्री, संकर्षण-सरस्वती, प्रद्युम्न-शान्ति, अनिरुद्ध-रति हैं। रुक्मिणी सत्यभामा, जाम्ववती, नाग्नजिती, मित्रविन्दा, कालिन्दी, लक्ष्मणा, सुशीलादि। वसुदेव, देवकी, नन्द, यशोदा, वलभद्र, सुभद्रा, गोप, गोपी, हैं। अर्जुन, निशठ, उद्धव, दारुक, विश्वक्सेन, सात्यकी गरुड नारद ये पार्षद हैं। पर्वत में इन्द्रनिधि, नीलनिधि, कुन्दनिधि, मकरनिधि, आनन्दनिधि, कच्छपनिधि-शङ्खनिधि, पद्मनिधि हैं। उसपद्म के ऊपर रत्नसिंहासन पर श्रीकृष्ण विराजमान हैं।

धर्मरूप ज्ञान स्वयं प्रकाशाचेतन द्रव्य विशेष है विभुप्रभा-तुल्य गुण वाला हैं। धर्मज्ञान श्रीकृष्ण और नित्य मुक्तों के निरन्तराविर्भाव रहता है। बद्ध जीवों का अविद्यावरण से आच्छादित होने से तिरोहित रहता है। मुक्तों का अविद्यावरण से आच्छादित होने से तिरोहित रहता है। मुक्तों का मोक्ष काल में आविर्भाव होता है। व्यापक है, सर्वज्ञान स्वतः प्रमाण है। देवदत्त है। देवदत्त है ३

इत्यादि धारा वाहिकज्ञान एकही है। जो जिसके आश्रित स्वभाव वाला है वह उसका गुण है यह गुण लक्षण है। जैसे धर्म ज्ञान चेतनमात्र में आश्रित है इसलिये गुण है। अवस्थाश्रय द्रव्य है धर्म ज्ञानाविर्भाव तिरोभाव अवस्थाश्रय है इसलिये द्रव्य हैं। धर्म-ज्ञानगुणी है प्रसरण होने से प्रभातुल्य। यहाँ धर्म ज्ञान पक्ष है गुण साध्य है प्रसरण हेतु है प्रभा दृष्टान्त है। धर्म-ज्ञान द्रव्य है संयोगादृष्ट भिन्न भावनाकरणत्व होने से जीवरूप ज्ञान समान है। यहाँ धर्म ज्ञानपक्ष है, द्रव्यत्वसाध्य है भावना करणत्व हेतु है जीवरूप ज्ञान दृष्टान्त है, इत्यादि अनुमान है। अतिप्रज्ञा संवित् धिषणा धी मनीषा पुष्टि मेधा वुद्धि धर्मरूप ज्ञान ही है। सुखादि कारण होने से उपाधि भेद से सुख, दुख, इच्छा, द्वेष, प्रवल है। प्रत्यक्षानुमान शब्द प्रमाण स्मृति संशय विपर्यय भ्रम, विवेक, व्यवाय, मोह, राग, द्वेष मदमात्सर्य, धैर्य चपलता, दम्भ, लोभ, क्रोध, दर्पस्तम्भ, द्रोह त्रास वैराग्यानन्द सुमति, दुर्मति, प्रीति, सन्तोषोन्नति, मित्रता, दया, मोक्ष, इच्छा, लज्जा, त्यागेच्छा, विचार, जय, पराजय, क्षमेच्छा, घृणाभावना, कपट, परनिन्दा, त्याग, तृष्णा, दुर्वासना, श्रद्धा, भक्ति, शरणागति ये सब जीव के धर्म हैं धर्म-ज्ञान की अवस्था विशेष है। ज्ञानशक्ति वलैश्वर्य, वीर्य तेज, सुशीलता, वात्सल्य, स्नेह, कोमलता सुहृदयता धैर्य समता दया, माधुर्य, गम्भीरता, उदारता, स्थिरता, पराक्रम ये सब परब्रह्म श्रीकृष्ण के गुण हैं। सर्वसाक्षात्कार रूप ज्ञान है। अकर्तव्य करने की सामर्थ्य शक्ति है। विश्व धारण सामर्थ्य बल है। नियमन सामर्थ्य ऐश्वर्य है। अविकारी वीर्य है। पर अभिभव रूप सामर्थ्य है। अधिक मन्द के

साथ छिद्र रहित सम्बन्ध स्वभाव सुशीलता है। दोष होने पर गुण देखना दोष न देखना वात्सल्य है। आश्रितजन का विरह असहनता आर्दव है। मन वचन शरीर से कोमलता आर्जव है। स्वसत्तानुपेक्षित-रक्षापरत्वसुहृदयता है। जन्म ज्ञान वृत्ति गुणानुपेक्ष से सर्वजनाश्रयिणी यशमत्ता है। आश्रित दोष छिपाना चातुर्य्य है। अकम्पन स्थैर्य है। अभग्न प्रतिज्ञा धैर्य है। परसत्तासेनाप्रवेश सामर्थ्य शौर्य्य है। परबल नाशन सामर्थ्य पराक्रम है। स्वप्रयोजन निरपेक्षित वा दुःखदूरी-करणेच्छा दया है अथवा अन्य के दुख से दुःखी होने का स्वभाव दया है। दुग्ध समान स्वादता माधुर्य्य है। दुरवग्रहता गम्भीरता है। अधिक वस्तु अन्य को देने पर और देने की इच्छा उदारता है। भक्ति शरणागत से प्रसन्न श्रीकृष्णजी मोक्ष देते हैं इसलिये भक्ति शरणागति मोक्ष के उपाय हैं। वे कर्मयोग ज्ञानयोग भेद से अनेक प्रकार के हैं। फल संकल्प रहित अनिषिद्ध नित्य नैमित्तिक परमेश्वर से वा वह कर्म योग है। कर्म योगांगगतया तीर्थदान यज्ञादि भेद से अनेक प्रकार के हैं। ये सब जीवगत पाप दूरीकरण द्वारा ज्ञानोत्पन्न कर उसके द्वारा साक्षात् भक्ति उत्पन्न करते हैं। कर्म योग से निर्मलान्तःकरण पुरुष का परमेश्वरांश प्रकृति सम्बन्ध शून्य स्वस्वरूप चिन्तन ज्ञान योग है। यह ज्ञान योग भक्ति का अंग है ज्ञान योग वाद भक्ति होती है। भक्ति द्विधा है, साधन, प्रेमलक्षणा। मन वचन से परमेश्वर सेवा साधनरूपा भक्ति है। यही सिद्धावस्था में परिणत होकर प्रेमलक्षणा होती है, उसीका नाम पराभक्ति, ध्रुवास्मृति है। गंगाधारा तुल्य सदा परब्रह्म में स्मृति प्रेमलक्षणा भक्ति कहाती है और साधनरूपा भक्ति का अंग है। विवेक

विमोकाभ्यास क्रिया कल्याणानवसादानुद्धर्ष इत्यादि साधन भक्ति के अंग हैं। शुद्धाहार विवेक है। कामना त्याग विमोक है। वार वार आवृत्ति अभ्यास है। पंचमहायज्ञानुष्ठान क्रिया है। पाठ होम, अतिथि सेवा, तर्पण, वलि, ये पंचमहायज्ञ हैं। आर्जव, दया, दान, अहिंसा, कल्याण हैं। आलस्य त्याग अनवसाद है। अति सन्तोष अनुद्धर्ष है। इति ॥

स्वयं स्वार्थ प्रकाशक चेतन ज्ञान स्वरूप ज्ञान धर्मी शरीर सम्बन्धी सकल्पादि धर्मी जीव श्रीकृष्ण दो हैं। जीव लक्षण आरम्भ में कह चुके हैं। यहाँ प्रसंग से जीव स्वरूप विचार है। वह जीव देहेन्द्रिय मन प्राणादि से भिन्न है। मेरी देह है, मेरा मन है इत्यादि व्यवहार से। वह जीव अणु परिमाण है एक काल में अनेक विषयानुभव करता है। अणु होने से उत्क्रान्त्यादि दीये हैं। धर्म ज्ञान से शरीर मात्र में व्याप्त है। जीव स्वरूप नित्य है जीवोत्पन्न होता है मरता है इत्यादि व्यवहार शरीर में होता है। जीव स्वयं प्रकाश है ज्ञानत्व होने से धर्मरूप ज्ञान समान। यहाँ जीवपक्ष है स्वयं प्रकाशत्व साध्य है ज्ञानत्व हेतु है धर्म रूपज्ञान दृष्टान्त है। इस जीव की कारणावस्था कार्यावस्था मोक्षावस्था भेद से त्रिधा अवस्था है। कार्य कारण दोनों अवस्थाऐं कर्माधीन हैं। मोक्षावस्था श्रीकृष्ण रूपाधीन है। कार्यावस्था में इसका सुख दुःखादि का भोग होता है। शुभ कर्मफल सुख, अशुभकर्म फल दुःख है। शुभ कर्म कर्ता शरीर त्याग वाद धूम को प्राप्त होते हैं धूम से रात्रि, रात्रि से कृष्ण पक्ष, उससे ६ मास दक्षिणायन ६ मासोत्तरायण से मास, फिर वर्ष, फिर पितृलोक, फिर आकाश फिर चन्द्र लोक को प्राप्त होते हैं वहाँ

सोम राजा होते हैं जब तक पुण्य है तब तक दैवाधीन होकर सुख भोगते हैं, पुण्य क्षय बाद वहाँ से चलकर आकाश में आते हैं, आकाश से वायु में फिर धूम में, तव मेघ में, मेघ से वर्षा द्वारा भूमि में आकर यवतिलादि वनस्पति होते हैं उनको प्राणी मात्र खाते हैं तब रज वीर्य होते हैं उससे कर्मानुसार फिर शरीर पाते हैं उससे कर्म करते हैं। इत्यादि आना जाना बना रहता है। जो अशुभ कर्म कर्ता हैं वे शरीर त्याग वाद नरक में जाते हैं वहाँ से आकर सूकर कुत्तादि योनि में जन्मते हैं। मुमुक्षु जीवों के श्रीकृष्ण कृपा से शरीर त्यागकाल में हृदय में प्रकाश होता है जिससे सुषुम्ना नाड़ी का ज्ञान होता है उस नाड़ी को पकड़ कर मस्तक में आते हैं तब मस्तक भेदन कर सूर्य किरणों में प्रवेश करते हैं। किरण से दिन में फिर शुक्ल पक्ष में, मास में, उत्तरायण दक्षिणायण में, तब वर्ष में, तब वायुलोक में फिर सूर्य लोक में, चन्द्र लोक में, फिर विद्युत् लोक में, तव वरुण लोक में तब इन्द्रलोक में, तब ब्रह्मलोक में आवरण भेदन कर विरजा नदी तट पर जाकर प्राकृत देश श्रीकृष्ण लोक की विरजा नदी सीमा है उसमें सूक्ष्म शरीर त्याग कर अमानव कर स्पर्श से अप्राकृत दिव्य विग्रह युक्त होते हुए ब्रह्मालङ्कार होकर दिव्य श्रीकृष्ण लोक में प्रवेश कर दिव्याप्सरा सत्कृत होते हुए महामणि मण्डप में प्राप्त होकर श्रीकृष्ण सिंहासन समीप स्वाचार्यों को प्रणाम कर श्री भू लीला देवी सहित विमलादि चामर से व्यज्यमानायुध सहित किरीट कुण्डलादि भूषित अपरमितोदार कल्याण गुण-सागर श्रीकृष्णजी के दर्शन कर उनके पादपद्मों में मस्तक से प्रणाम करते हैं तब श्रीकृष्ण से पूछा जाता है कि आप

कौन ? तब वह कहता है कि मैं आपसे स्वाभाविक भिन्न रहूँ, ऐसा श्रवण कर श्रीकृष्णजी उसको हृदय से लगा कर कृपा दृष्ट्याऽव-लोकन करते हैं। तब श्रीकृष्ण समान अपहतपाप्मत्वादि साधर्म्य रूप मोक्ष को प्राप्त होता है। यही अर्चिरादि मार्ग कहाता है॥ इति॥

सर्वेश्वर सर्व भिन्नाभिन्न सर्वांशी सर्व कर्माध्यक्ष ज्ञान स्वरूप स्वधर्म रूप ज्ञान से वस्तु मात्र प्रकाशक सर्व शब्दवाच्य जगदभिन्न निमित्तोपादानकारण ब्रह्म सर्वेश्वर श्रीकृष्ण हैं। कालादि अन्तर्यामी रूपेण सहकारी कारण हैं। चिदचिच्छब्दवाच्य स्वाभाविक सूक्ष्माव-स्थाप्राप्त सत्कार्य रूप स्वशक्तियों का स्थूलतत्तद्रूपेण प्रकाशक ब्रह्मोपादानकारण है। स्वस्वानादि कर्म संस्काराधीन अत्यन्त सङ्कुचित भोगस्मरणायोग्य ज्ञानधर्म्मी चेतनों का कर्म फल भोग योग्य ज्ञान शक्ति प्रकाश से तत्तत्कर्म फल तत्तद्भोग साधनों के साथ युक्तकर्ता ब्रह्म निमित्त कारण हैं। अथवा उत्तरावस्था युक्तोपादानकारण है जैसे घटावस्था युक्त पिण्डावस्था मृत्तिका सहकारी निमित्त कारणान्त-र्गत है। जगदुपादान निमित्तकारण श्रीकृष्ण हैं। वह श्रीकृष्ण स्वरूप से धर्म विग्रह से विभु हैं, विभु नाम व्यापक। देश, काल, वस्तु परिच्छेद शून्य हैं। सत्यत्व, ज्ञानत्व आनन्दत्वादि श्रीकृष्ण स्वरूप निरूपक धर्म हैं ज्ञानशक्त्यादिक निरूपित स्वरूप धर्म हैं। सर्वज्ञत्व, सर्वशक्तित्वादि सृष्ट्योपयोगी धर्म हैं। वात्सल्य, सौशील्य, सौलभ्यादि शरणोपयोगी धर्म्म हैं। दया, करुणा, रक्षोपयोगी धर्म हैं। परव्यूहविभवान्तर्यामी अर्चा भेद से पञ्चधा है। विरजा नदी से पर त्रिपाद विभूति में पर श्रीकृष्ण हैं। सङ्कर्षण, वासुदेव, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध ये चतुर्व्यूह हैं। ज्ञान, बलैश्वर्य, वीर्य्य, शक्ति, तेज,

षड्गुण युक्त वासुदेव हैं। ज्ञान बल युक्त संकर्षण हैं। ऐश्वर्य वीर्य युक्त प्रद्युम्न हैं। शक्ति तेज युक्त अनिरुद्ध हैं। केशवादिक १२ मास के १२ आदित्यों के अधिष्ठाता देवता है और इनका ऊर्ध्व पुण्ड्र तिलक में स्थान विधान हैं। केशव, नारायण, माधव, गोविन्द, विष्णु, मधुसूदन, त्रिविक्रम, वामन, श्रीधर, हृषीकेश, पद्मनाभ, दामोदर, ये १२ केशवादि हैं। संकर्षण का कार्य शास्त्र प्रवर्तित संहार हैं। प्रद्युम्न का कार्य धर्म प्राप्ति सृष्टि है। अनिरुद्ध का कार्य तत्त्व बोधन रक्षा है। वासुदेव से केशव, नारायण, माधव होते हैं। संकर्षण से गोविन्द विष्णु मधुसूदन ये तीन होते हैं। प्रद्युम्न से त्रिविक्रम वामन श्रीधर होते हैं। अनिरुद्ध से हृषीकेश पद्मनाभ दामोदर होते हैं। अवतार भेद। मुख्य गौण भेद से। विभवावतार द्विधा है। मुख्यावतार श्रीनृसिंह, राम, कृष्ण हैं। गौण द्विधा है स्वरूपावेश, शक्त्यावेश। चेतनों के शरीरों में स्वासाधारण रूपेण विग्रहों के साथ आवेशावतार है। जैसे परशुरामादि। कार्यकाल में अनेक शिवादि चेतनों में शक्ति रूपेण स्फुरण शक्त्यावेशावतार हैं। मुख्यावतार में मत्स्यादि अप्रधान हैं। इन अवतारों के भेद निम्बार्कमतार्थ प्रकाशिका गीता टीका में लिख चुका हूँ। मत्स्य, कूर्म, वाराह, वामन, परशुरामादि मत्स्यादि हैं। दुष्टों के नाश, भक्तों की रक्षा, अवतार प्रयोजन है। स्वर्ग नरकादि अनुभव काल में जीवों के हृदय में स्थित जीव शरीर धर्म से रहित अन्तर्यामी हैं। देशकाल नियम रहित गृह ग्राम नगर पर्वतादिकों में वर्तमान मूर्ति विशेष अर्चावतार हैं। ॥ इति द्रव्यनिरूपणम् ॥

सत्त्व, रज, तम, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, संयोग

शक्ति ये दश अद्रव्य हैं। प्रकाश सुखलाघवादि कारण शक्त्यादि से अन्य अद्रव्य सत्त्व हैं। सो द्विधा है शुद्ध सत्त्व मिश्र सत्त्व भेद से। रज तम शून्य द्रव्य में रहने वाला सत्त्व शुद्ध सत्त्व है। सो नित्य विभूति में प्रवर्तक ईश्वर में रहता है। रज तम के सहित मिश्र सत्त्व है। यह जीव में रहता है। लोभ प्रवृत्त्यादि कारणातीन्द्रिय शक्त्यादि से अन्य अद्रव्य रज है। प्रमाद मोहादि कारण अतीन्द्रिय शक्त्यादि से जन्यअद्रव्य तम है। मिश्र सत्त्व मिश्र रज मिश्र तम ये प्रकृति आधीन पुरुष सम्बन्धी हैं। वे प्रलय काल में समान रहते हैं सृष्टि काल में भिन्न-भिन्न रूप होकर सृष्ट्यादि के उपयोगी होते हैं। ईश्वर सङ्कल्पादि सहकारी भेद से परस्पर अविभवोद्भव होते हैं। ज्ञान सुखादि कारण मोक्षकारण सत्त्व गुण हैं। रागादि रूप परिणत कर्म संग दुःखादि कारण इस लोक स्वर्गादि फल दाता रजोगुण हैं। अज्ञान रूप परिणत आलस्यादि कारण नरक दाता तमोगुण है। श्रोत्र से ग्राह्य पृथ्वी, जल, तेज में रहने वाला शब्द है सो द्विधा है। अक्षर अनक्षर रूप भेद से। कचटतप आदि अक्षर है रूप हैं देव मनुष्यादि के ताल्वादि स्थान में रहते हैं। भेरी आदि से उत्पन्न शब्द अनक्षर है। इन शब्दों को श्रोत्रेन्द्रिय अपने ही जाकर ग्रहण करती हैं। शब्द ग्रहण में श्रोत्र का वायु सहकारी है। मनुष्यादि स्पर्शेन्द्रिय ग्राह्य अद्रव्य स्पर्श है। सो त्रिधा है शीतोष्ण अनुष्णाशीत। जल में शीत स्पर्श है, तेज में उष्ण स्पर्श है, पृथ्वी, वायु में अनुष्णाशीत स्पर्श है। फिर द्विधा है पाकज, अपाकज। पृथ्वी में पाकज है, जल तेजादि में अपाकज है। मनुष्यादि के चक्षु इन्द्रिय मात्र ग्राह्य अद्रव्य रूप हैं। सो चतुर्धा है श्वेत, रक्त, पीत, कृष्ण जल, चांदी, शुक्ति,

चन्द्रादि के रूप श्वेत हैं। अग्नि जपा कुसुम विद्रुम पद्म रागादिकों का रूप रक्त है। सुवर्ण, हरताल, हलदी आदि का रूप पीत है। मरकत मणि, भंवरा, मेघ, अन्धकारतमालादि का रूप कृष्ण है। प्रकारान्तर से रूप द्विधा है भास्वर अभास्वर। अग्नि में भास्वर है पृथ्वी जल में अभास्वर है । वायु आकाश काल में अल्प भाग होने से रूप प्रत्यक्ष नहीं होता है। जीव ब्रह्म में रूप अप्राकृत होने से ध्यान से ब्रह्म की कृपा से प्रत्यक्ष होता है। मनुष्यादि जिह्वा मात्र ग्राह्यरस है सो षड्धा है मधुर, अम्ल, लवण, कटु, कषाय और तिक्त। ऊख दूधादि का रस मधुर है, आम्र आंवला का अम्ल है, नून लवण है, निम्बादि रस कटु है हरीतकी, वहेरा का रस कषाय है, मरिचादि का रस तिक्त है। मनुष्यादि घ्राणेन्द्रिय ग्राह्य गन्ध है। वह द्विधा है सुरभि, असुरभि। मृगमद चम्पादि गन्ध सुरभि है। पृथ्वी में ही सुरभि गन्ध पाक से असुरभि होता है। शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध ये पञ्चीकरण प्रक्रिया से सर्व द्रव्यों में रहते हैं। संयुक्त व्यवहार का कारण संयोग है सो षट् द्रव्यों में रहता है। सो कार्य कारण भेद से द्विधा है। दो की प्रेरणा से एक की प्रेरणा से। दो मेष वा दो मल्ल के संयोग दोनों की प्रेरणा से है । वृक्ष वन्दर का संयोग एक वन्दर की प्रेरणा से है। सिद्धान्त में संयोग से संयोगविभाग से विभाग नहीं होता है। संयोगाभाव विभाग है। कार्य कारण भाव में अन्य जगह संयोग होता है कार्य का कारण में तादात्म्य सम्बन्ध रहता है। सब कारकों का कारणत्व निर्वाहक अद्रव्य शक्ति है। अनुमानागमों से सिद्ध होती है अतीन्द्रिय है ६ द्रव्यों में रहती है दाहक विरोधी चन्द्र कान्त मणि मन्त्र, अग्नि समीप होने से अग्नि में

दाह शक्ति का तिरोभाव होता है मणि मन्त्र दूर करने पर दाह शक्ति का आविर्भाव होता है। जीव का विशेष गुण बुद्धि सुख दुःखेच्छा द्वेष प्रयत्न ये ६ ज्ञानान्तर्गत है। भावनाख्य संस्कार ज्ञानान्तर्गत है। वेगाख्य संस्कार कर्मान्तर्गत है। स्थिति स्थापक संयोगान्तर्गत है। विभाग पृथक्त्व संयोगाभावान्तर्गत है। परत्वापरत्व देश काल संयोग होने से संयोगान्तर्गत हैं संख्यापरिमाण द्रव्यत्व स्नेह द्रव्य स्वरूप है। गुरुत्व शक्ति के अन्तर्गत हैं। परिशेष से त्रिगुण शब्द स्पर्शादि संयोग शक्ति ये दश गुण है। त्रिगुण प्रकृति के गुण हैं प्रकृति जीव सम्बन्ध होने से जीव गुण कहाते हैं। सत्त्व रूप ज्ञान सात्त्विक है। शब्दादि पञ्च प्रकृति कार्य महाभूतों के गुण हैं। शुद्ध सत्त्व त्रिपाद विभूति में श्रीकृष्ण के गुण हैं। संयोग शक्ति ६ द्रव्य में रहते हैं।

इति श्री

श्रीनिम्बार्क वीथी पथिक
नैष्ठिक ब्रह्मचारि पण्डित श्रीवैष्णवदास
शास्त्रि विरचितोऽयं वेदान्त पदार्थ-
परिचयो नाम ग्रन्थः समाप्तः।

(शुभमस्तु)

भूमविद्योपदेश

"यो वै भूमा तत्सुखं नाल्पे सुखमस्ति, भूमैव सुखं भूमात्वेव विजिज्ञासितव्य इति, भूमानं भगवो विजिज्ञासे- इति।"

(छान्दोग्योपनिषत् अ० ७ खण्ड २३)

"यत्र नान्यत् पश्यति, नान्यच्छृणोति नान्यद् विजानाति स भूमाऽथ यत्रान्यत्पश्यत्यन्यच्छृणोत्यन्यद् विजानाति तदल्पं यो वै भूमा तदमृतमथयदल्पं तन्मर्त्यम्। स भगवः कस्मिन् प्रतिष्ठित इति, स्वे महिम्नि यदि वा न महिम्नीति।"

(छा० अ० ७ खण्ड २४)

*

ग्रन्थ प्रणेता – विद्ववद्वरेण्य पं. श्रीवैष्णवदासजी शास्त्री